अंक 11

"वेटिया वेटिया वाड़ करें
अने कागला बएं ने भागी पड़े"

वातें वाग्धारा नी

अप्रैल 2021

VAAGDHARA

जनजातीय क्षेत्र के किसान भाईयो बहनो, महान कोतवाल, स्वराज मित्रो, स्वराज सेवको एवं मेरे स्वराज परिवार व प्यारे बच्चो

जय गुरु !!!

मैं चर्चा कि शुरुआत होली कि शुभकामनाओं के साथ करता हूँ चुंकि अब हमारे खेत का समय शुरु होने वाला है तो उसको लेकर के भी आपको शुभकामनाएँ देता हूँ। हमारे कई साथियो के परिवारो में नोतरा होगा, बांगडे होगे, शादीया होंगी कई कार्यक्रम होगे तो उसके लिए भी शुभकामनाएँ देता हूँ।

और चर्चा करुंगा कि किस प्रकार से हम हमारी संस्कृति और हमारी विरासत में मिली हुई सीख परम्पराओ को हमारे जीवन में सफलता और स्वराज में कैसे बढ़ा पाए। चुंकी पिछले कई अंको से मैं आपके साथ समय समय पर विशेष विषयों व अन्य विषयो पर चर्चा करता हूँ परन्तु इस बार मैं अपने आपको आपसे नोतरे पर चर्चा करने से नही रोक पा रहा हूँ। चुंकि नोतरा हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। देश विदेश में घुमने पर ही नही बल्कि यह हमारे स्थानीय कई नागरिको द्वारा व आदिवासी भाई बहन और जो पढे लिखे है उनके द्वारा भी कई बार चर्चा में यह कहा जाता है कि "आ नोतरु तो मने हेकी ने खाईग्यु है, आ नोतरु उपले पाने नी आवा दे" और उस समय मेरे मन में यह प्रश्न होता है कि क्या हमारे बापदादा, हमारे पूर्वज किसी गलत परम्परा को प्रारम्भ करके गए है परन्तु ऐसा नही है, मैं भी इसी क्षैत्र से हूँ और मैने भी कई नोतरे बांगडे में भाग लिया है।

एक समय वो हुआ करता था जब नोतरे में जाने वाला व्यक्ति अपने खुद का अनाज साथ में बांधकर के पोटली में लेकर के जाता था और जिसके घर कार्यक्रम होता था वहा पर सभी लोग अपना अपना अनाज व दाना इकठ्ठा करते जिसकी जैसी हेसियत होती वो उसके अनुसार कुछ मीठा बनाता नही तो दाल चावल बनाता सभी साथ में मिलकर बैठकर खाते और जितना उसने सहयोग दिया था उसके उपर कुछ सहयोग वहा पर प्रदान करता था और इतनी सामुहिकता थी कि उस पुरे को जो सहयोग मिलता उसे समाज के लोग, गांव वाले रिश्तेदार बैठ करके उसका हिसाब लगाते और जिसके घर पर कार्यक्रम होता उसे पुछते कि इन पैसो का तु क्या करेगा, कहा उपयोग मे लेगा और उन पैसो का हिसाब होता उससे वह उसका कर्ज व उसकी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाता है।

बात है 1995 कि मैं रात को किसी गांव में रुका हुआ था और एक वृद्ध ने मेरे सामने कहा "आ नवअ उसर न सोरअ गाडंअ बरे ऐम नोतरा मे दारु कोण लावतु होगा अमारा बापदादा जीवता हता कइ दाडे इनअना पईसा अमे खरस न ती करया ने आणा में वाजा वजाडवा हारु स्पीकर लईने आईव्य है और उसी समय घटना घटित हुई स्पीकर को डाइरेक्ट लाईन से जोड दिया, जिससे स्पीकर और जो सिस्टम जल गया इनके जलने पर ट्रांसफरमर उड़ गया और बिजली विभाग के लोग आ करके उस पर केस करने कि धमकी देने लगे उस धमकी के बाद उस मामले को रफादफा करवाया गया। उससे उसे आर्थिक नुकसान हुआ साथ ही गांव के कई लोग इस स्थिति पर बहुत ही बडे दुःखी हुए इस पर कई लोगो ने ये कहा कि उन्हें ये करने कि कहा जरुरत थी क्या हमारे ढोल,हमारे गाने, क्या हमारी परम्परा गलत थी ये बात 25 साल पुरानी हैं इससे हम अंदाजा लगा सकते है कि आज हमारी परिस्थितिया बिगडी है, सुधरी है या फिर बदली है।

मैं युवाओं से, हमारे स्वराज सेवको से, स्वराज मित्रो से हमारे किसान भाई बहनो से आग्रह करना चाहता हूँ कि हमें सोचना होगा कि हमारी परम्परा में जो हमारे पूर्वज स्थापित कर गए थे चाहे वो नोतरा हो, हाट हो, भाजघेड़ा हो, बांगडा हो, हलमा हो या फिर नाता हो कोई भी विषय वस्तु हो सकती है। इन सभी के पीछे कुछ तो अच्छाईयां रही होगी और उन अच्छाईयो को हमने गोण कर दिया उसे इस तरह से पेश करते है कि बाहरी समाज जो इन विषय वस्तु को नही समझता वो इसे बुराई के रुप में प्रस्तुत करता है। इसी तरीके से बीस वर्ष पुरानी एक घटना थी जैसे घाटोल में हाट भरता था और हमारे यहा पर एक जिलाधीश महोदय थे और वो आए और उन्होने कह दिया यह हाट बच्चो को बिगाडता है बच्चे स्कूल छोडकर इस हाट में आते है। यह कहकर हाट पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। क्या हाट हमारे लिए गैर आवश्यक है?

नही ऐसा हो नही सकता क्योकि हाट वो जगह थी जहां पर हर व्यक्ति कि आवश्यकता व जरुरत के सामान का आदान प्रदान होता था उसे उचित मुल्य मिलता था उसकी जरुरत कि चीजे सही दाम पर मिलती थी उसकी एक ही बार में आवश्यकताओ कि पूर्ति होती थी। और भी कई वस्तुए इससे जुडी हुई होती । क्या हम अपने तौर तरीको को फिर से सोचने समझने कि आवश्यकता महसुस करते है तो पुनः में अपनी उसी बात पर आता हूँ कि अभी समय है हमारे में से कई परिवारो में नोतरे होंगे नोतरे से आने वाले पैसो का सही उपयोग यह एक सहकार है, यह एक बैंकिंग है। पढे लिखे बाजार में रहने वाले लोग भी उसे विभिन्न नाम देते है कोई इसे वीसी कहता है, कोई सामुहिक बैक कहता है, कोई समिति कहता है, कोई क्लब कहता है, कोई किट्टी क्लब कहता ऐसे कई नाम दिए हुए है। जो ये लोग अभी कर रहे है यह तो हमारे बाप दादा पहले ही कर चुके है तो हमें यह समझना होगा कि किस प्रकार से यह हमारे अपने समाज को आगे बढाने में सहायक हो सकता है और यह तभी सहायक हो सकता है जब हम उससे आने वाले पैसे उस सहयोग को सही जगह पर सही दिशा में काम पर लगायेगें। किसी भी प्रकार के गैर खर्चो में व्यय नही करेंगे और उस परम्परा को परिभाषित करेगे तो हम हमारी पीढ़ियो को अच्छे संस्कार दे पाएंगे। इसके अलावा एक विशेष आग्रह करना चाहुंगा गर्मी आने वाली है अभी नई नई खेतो कि कटाई हुई है गर्मी कि जुताई बहुत ही महत्वपुर्ण है अगर जुताई करेंगे तो गर्मी लगेंगी तो गर्मी से मिट्टी के अन्दर जो किडे होंगे वो मरेगे उर्वरता मजबुत होगी, नीचे कि मिट्टी निकलकर के उपर आयेगी और बरसात का पानी आते ही सीधा अन्दर जायेगा और पहली बरसात का पानी अन्दर जाता है तो मिट्टी को और उपजाऊ बनाता है। मैं आग्रह करना चाहता हूँ कि इसे हम विशेष रुप से ध्यान रखे और अन्तिम बात के तौर पर गर्मी में खेती करने वाले मेरे किसान भाईयो व बहिनो को शुभकामनाएँ देना चाहता हूँ मुंग कि खेती जीवन को बदलने वाली खेती है। गर्मी में सब्जी का उत्पादन परिवार को सुकुन व समृद्ध बनाने का साधान है। और नरेगा का काम आपका अपना काम है। आप अपने खेत का काम अपने घर पर ही रहकर करे और ईमानदारी से करे हर हाथ को काम हर काम का पुरा दाम तो हमारा गांव और हमारा परिवार कभी नही पिछडेगा

जय हिन्द !!!

आपका अपना
जयेश जोशी, वाग्धारा

गहरी जुताई का महत्व

किसान खेतों की जुताई का काम अक्सर बुवाई के समय करते हैं। फसलों में लगने वाले कीड़े व बिमारियों की रोकथाम की दृष्टी से बुवाई के समय की गई जुताई से ज्यादा लाभ गर्मी में गहरी जुताई करके खेतों को खाली छोड़ देने से मिलता है। गर्मियों में गहरी जुताई करने से भूमि का तापमान बढ जाता है। जिससे कीड़ों के अण्डे, प्यूपा और लारवा खत्म हो जाते हैं। फसल की अच्छी उपज के लिए रबी फसल कटाई के तुरन्त बाद गहरी जुताई कर ग्रीष्म ऋतु में खेत को खाली रखना बहुत ही लाभदायक रहता है क्योंकि कीड़ों के अण्डे, प्यूपा और लारवा खत्म होने से खरीफ के मौसम में बाजरा, धान, दलहन और सब्जियों में लगने वाले कीड़े व बिमारियों का प्रकोप कम हो जाता है। अतः गर्मी में गहरी जुताई करने से कीड़े-बिमारियों से एक सीमा तक छुटकारा पाया जा सकता है। फसल कटाई के उपरांत मशीनों के उपयोग के कारण खेत असंतुलित हो जाते हैं। खेत खरपतवारों, कठोर सतह एवं हानिकारक कीट व्याधियों से संक्रमित रहते हैं। फसल कटने के बाद खेतों की जुताई मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए सर्वोत्तम है। अतः इन खेतों में जुताई करना आवश्यक है। कटाई के तुरंत बाद जुताई करना आवश्यक है, क्योंकि रबी की फसल कटाई के पश्चात खेत में नमी शेष रह जाती है, खेत में नमी रहने पर बैलों को कम मेहनत करनी पड़ती है, साथ ही साथ गहरी जुताई भी हो जाती है। ऐसी परिस्थितियों में ग्रीष्मकालीन जुताई इनके नियंत्रण एवं पर्यावरण के लिए अनुकूल किफायती व प्रभावी तकनीक है।

कब करें ग्रीष्मकालीन जुताई?

फसल की अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए रबी की फसल की कटाई के तुरन्त बाद गहरी जुताई कर ग्रीष्म ऋतु में खेत को खाली रखना बहुत ही लाभदायक रहता है, ग्रीष्मकालीन जुताई रबी मौसम की फसलें कटने के बाद शुरू होती हैं जो बरसात शुरू होने पर समाप्त होती है। अर्थात् अप्रैल से जून माह तक ग्रीष्मकालीन जुताई की जाती है। गर्मी के महीनों के दौरान दिन का तापमान बहुत अधिक होता है, साथ ही इस समय अधिकांश खेत खाली होते हैं। अतः शुष्क क्षेत्रों में हानिकारक जैविक कारकों ;पादप रोग,निमेटोड, सूक्ष्मजीव,कीट-पतंग, खरपतवार के नियंत्रण के लिए ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई कम खर्च में सबसे सफल तकनीक है। किसान भाइयों के खेत जैसे-जैसे खाली होते जाते हैं वैसे ही जुताई कर देनी चाहिए।

ग्रीष्मकालीन जुताई से मृदाजन्य रोगों का नियंत्रण

पिछली फसल के रोग ग्रसित भाग जो मृदा में मिल गए है, वे सूर्य की तेज किरणों से नष्ट हो जाते हैं। जुताई करने से ऊपर की मिट्टी नीचे वह नीचे से ऊपर आ जाती है, जिससे सतह पर पड़ी सूखी पत्तियां, पौधों की जड़े,डंठल वह खरपतवार नीचे दब जाते हैं, साथ ही नीचे परतों में पनप रहे कीड़े मकोड़े, खरपतवार के बीज अन्य रोग जनित कारक तथा निमेटोड सूत्रकृमि ऊपरी स्तर पर गर्मियों की कड़क धूप में आकर मर जाते हैं, यदि ग्रीष्मकालीन जुताई की जाए तो इन सभी समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

गर्मी की जुताई कैसे करेंः-

गर्मी की जुताई 15 से.मी. गहराई तक किसी भी मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए। यदि खेत का ढ़लानपूर्व से पश्चिम की तरफ हो तो जुताई उत्तर से दक्षिण की ओर यानि ढ़लान को काटते हुए करनी चाहिए जिससे वर्षा का पानी व मिट्टी न बह पाये। ट्रैक्टर से चलने वाले तवेदार मोल्ड बोर्ड हल भी गर्मी की जुताई के लिए उपयुक्त हैं।

किस दिशा में जुताई करें ?

यदि खेत ढलान पूर्व से पश्चिम की ओर हो तो, जुताई उत्तर से दक्षिण की ओर करनी चाहिए। यदि भूमि ऊंची नीची है तो उसे इस प्रकार जोतना चाहिए कि मिट्टी का बहाव न हो, यानी ढाल के विपरीत दिशा में जुताई करें। यदि एकदम ढलान है तो टेढ़ी जुताई करना उपयुक्त होगा। तवेदार हल से जुताई करने पर फसल के डंठल कटकर छोटे हो जाते हैं और साथ ही साथ भूमि में जीवांश की मात्रा को बढ़ाते हैं।

ग्रीष्मकालीन जुताई के लिए मुख्य बातें

- ग्रीष्मकालीन जुताई हर दो-तीन वर्ष में एक बार जरूर करें।
- जुताई के बाद खेत के चारों ओर एक ऊँची मेड़ बनाने से वायु तथा जल द्वारा मिट्टी का क्षरण नहीं होता है, तथा खेत वर्षा जल सोख लेता है।
- जुताई हमेशा मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी करनी चाहिए, जिससे खेत की मिट्टी के बड़े-बड़े ढेले बन सके, क्योंकि ये मिट्टी के ढ़ेले अधिक पानी सोखकर पानी खेत के अन्दर नीचे उतरेगा जिससे भूमि की जलधारण क्षमता में सुधार होता है।
- किसान भाई यदि अपने खेतों की ग्रीष्मकालीन जुताई करेंगे तो निश्चित ही आने वाली खरीफ मौसम की फसलें न केवल कम पानी में हो सकेगी बल्कि बरसात कम होने पर भी फसल अच्छी हो सकेगी तथा खेत से उपज भी अच्छी मिलेगी तथा खर्चे की लागत भी कम आयेगी। जिससे कृषकों की आमदनी में बढ़ोतरी होगी। अतः उपरोक्त फायदों को मद्देनजर रखते हुए किसान भाईयों को यथा सम्भव एवं यथाशक्ति फसल उत्पादन के लिए हमेशा ग्रीष्मकालीन जुताई करनी चाहिये।

ग्रीष्मकालीन जुताई के लाभः

- मिट्टी की ऊपरी परत के टूटने व गहरी जुताई करने से मिट्टी बढ़ जाती है, और मिट्टी नरम एवं भुरभुरी होने से नमी संरक्षण दर भी बढ़ जाता है। फल स्वरूप पौधे के जड़ों को आसानी से जल उपलब्ध हो जाता है। वर्षा जल को अवशोषित करने से मिट्टी में वायुमंडलीय नाइट्रोजन क्षमता बढ़ती है, जिससे मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि होती है।
- ग्रीष्मकालीन जुताई क्रमबद्ध सुखाने और शीतलन के कारण मिट्टी दानेदार हो जाती है, एवं उसकी संरचना में भी सुधार होता है।
- ग्रीष्मकालीन जुताई से मिट्टी में वायु संचार भी बढ़ जाता है, सूक्ष्म जीवों की अभिक्रिया सक्रिय हो जाती है, जैविक तत्वों का अपघटन को तेजी से होता है, जिससे पौधों को अधिक पोषक तत्व मिलते हैं।
- मिट्टी में वायु की पारगम्यता बढ़ने से पिछली फसलों और खरपतवार व कीटनाशक अवशेषों और हानिकारक एलोपैथिक रसायनों के क्षय में भी मदद मिलती है, जो नए उत्पादित पौधों के विकास को रोकते हैं।
- गर्मी के मौसम में मिट्टी की परतों के नीचे कई कीड़े व कीट पाए जाते हैं। गर्मी में जुताई कीटों के अंडे, लार्वा और प्यूपा मर जाते है, जिससे बाद की फसल में कीड़े और कीटों का खतरा कम हो जाता है,फलस्वरूप कीटनाशक की खरीद में किसान का खर्च कई गुना कम हो जाता है।

- ग्रीष्मकालीन जुताई से मिट्टी में उपस्थित कई रोग जनित कारक नष्ट हो जाते हैं, अतः जुताई द्वारा पौधों में रोगों के अवरोध के कारण किसान फफूंद नाशक और कीटनाशकों की खरीद में राहत पा सकते हैं। ग्रीष्मकालीन जुताई मिट्टी में जीवाणु की सक्रियता बढ़ाती है तथा यह दलहनी फसलों के लिए अधिक उपयोगी है।
- पादप परजीवी निमेटोड सूक्ष्मजीव है, प्रकृति में सर्वव्यापी, जो मिट्टी के अंदर छिपे रहते हैं व अनुकूल परिस्थिति आने पर फसल को नष्ट कर देते हैं। ग्रीष्मकालीन जुताई और फसल चक्र से निमेटोड को नियंत्रण किया जा सकता है,इस प्रकार नियंत्रण से लागत कम आती है।
- ग्रीष्मकालीन जुताई खरपतवार नियंत्रण में भी सहायक है। गहरी जुताई और पलटने से खरपतवार नियंत्रण और खरपतवार नाशी का कम उपयोग ग्रीष्मकालीन जुताई का एक बड़ा फायदा है। काँस, मोथा आदि के उखड़े हुए भागों को खेत से बाहर फेंक देते हैं। अन्य खरपतवार उखड़ कर सूख जाते हैं। खरपतवारों के बीज गर्मी व धूप से नष्ट हो जाते हैं। इसके परिणाम स्वरूप फसलो और खरपतवारों के बीच एक ही पौधे के पोषक तत्व के बीच प्रतिस्पर्धा कम हो जाती है, जिससे उत्पादकता बढ़ जाती है।
- बारानी खेती वर्षा पर निर्भर करती है अतः बारानी परिस्थितियों में वर्षा के पानी का अधिकतम संचयन करने लिए ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करना नितान्त आवश्यक है। अनुसंधानों से भी यह सिद्ध हो चुका है कि ग्रीष्मकालीन जुताई करने से 3 प्रतिशत बरसात का पानी खेत में समा जाता है।
- ग्रीष्मकालीन जुताई करने से बरसात के पानी द्वारा खेत की मिट्टी कटाव में भारी कमी होती है अर्थात् अनुसंधान के परिणामों में यह पाया गया है कि गर्मी की जुताई करने से भूमि के कटाव में 5 प्रतिशत तक की कमी आती है।
- ग्रीष्मकालीन जुताई से गोबर की खाद व अन्य कार्बनिक पदार्थ भूमि में अच्छी तरह मिल जाते हैं जिससे पोषक तत्व शीघ्र ही फसलों को उपलब्ध हो जाते है।

गर्मी की जुताई करते समय रखें सावधानीः-

- मृदा के बड़े बड़े ढेले रहे, तथा मिट्टी भुरभुरी न हो पाये क्योंकि गर्मी मे हवा के द्वारा मिट्टी के कटाव की समस्या हो जाती है।
- ज्यादा रेतीले इलाकों में गर्मी की जुताई न करें।

निष्कर्ष-

ग्रीष्मकालीन जुताई करने से मिट्टी के अंदर सूर्य की रोशनी और हवा प्रवेश करती है। सूर्य की तेज किरणों से मृदा के अंदर खरपतवार के बीज, कीट, अंडे, लटें आदि नष्ट हो जाती हैं। जुताई करने से खेत की प्राथमिक क्रियाएं सुचारू रूप से शुरू हो जाती है एवं मिट्टी के कणों की रचना भी दानेदार हो जाती है, जिससे मिट्टी में वायु संचार, भूमि के अंदर नमी का संरक्षण एवं जल धारण क्षमता बढ़ जाती है। जुताई द्वारा मिट्टी ढीली हो जाती है एवं उसमें ढेले बन जाते हैं जो कि बरसात के पानी को सोख लेते हैं साथ ही साथ अवरोधक बनकर पानी को खेत के बाहर जाने से भी रोकते हैं। अतः पानी खेत में ही खड़ा होकर भूमि की परतों में चला जाता है जिससे जलस्तर भी बढ़ता है जबकि बिना जुताई वाले खेतों में सिर्फ पानी बहकर खेतों से बाहर चला जाता है बल्कि अपने साथ मिट्टी के उपजाऊ परत, खाद एवं जीवाश्म को भी बहा कर ले जाता है, जिससे मिट्टी का कटाव होता है और ऊर्वरा शक्ति कम हो जाती है। इस से सबसे बड़ी समस्या यह है कि पैदावार कम हो जाएगी, किसानों की आमदनी कम होगी एवं साथ ही साथ मिट्टी की ऊर्वरा शक्ति को वापस लाने के लिए बहुत अधिक मेहनत, धन व खाद लगता है।

पी.एल. पटेल
थीम लीडर सच्ची खेती, वाग्धारा

विकास परसराम मेश्राम
कार्यक्रम अधिकारी सच्ची खेती, वाग्धारा

प्रकृति का पूजन

धनघड़ी धन भाग
धनघड़ी धन भाग रे जोवो मानवी राजी आज
रे मारे धनघड़ी धन भाग
टेमें आवै वरसाद रे सुखी रे है बारे जात
रे मारे धनघड़ी धन भाग
वन वगड़ा नी वातें न्यारी मनडू नासे आज
रे मारे धनघड़ी धन भाग
धरती मानी उन्नी लागे लिली लिली आज
रे मारे धनघड़ी धन भाग
मंगरा माते सार रे डूंगर रुखड़ा भरिया आज
रे मारे धनघड़ी धन भाग
धापी खाए धापी पिए मानवी मूल्यों कार
रे मारे धनघड़ी धन भाग
गऊ सोका ने मक्की पाके भरिया है भंडार
रे मारे धनघड़ी धन भाग
वड़लानी वड़वाईये झूला झूले हैं नर नार
रे मारे धनघड़ी धन भाग
पेपरों मारो विष्णु जी ने लेमबड़ो ओखद जाण
रे मारे धनघड़ी धन भाग
पीपा मले पाणी ताजू साया मले आज
रे मारे धनघड़ी धन भाग
वागड़ वारी वायरी ने वागड़ियो वरसाद
रे मारे धनघड़ी धन भाग
मेरे खेरे जातू मानवी निरखे आपडु भाग
रे मारे धनघड़ी धन भाग
देवी देरे जातो मानवी कोरेकुशल आज
रे मारे धनघड़ी धन भाग
रुडू रूपारु देश आ मारो रुड़ा है नर नार
रे मारे धनघड़ी धन भाग
धनघड़ी धन भाग रे जोवो मानवी राजी आज
रे मारे धनघड़ी धन भाग

*****

आ गीत केटलु ताजू लागे है । आणा गीत ना भाव जो जोवों तो एम लागे के परकरती अने पुरुष ना सनातनी सगपण नी वानगी है आ गीत । आमे जाणं के परकरती स अमारी रक्षक है, अमारी पोषाक है अने अमारी पेसाण है ।

आज यदि हम पंचतत्व की बात करते है तो पाते है कि इनकी शांति इनके संरक्षण और संवर्धन के बिना मानव के अस्तित्व की कल्पना करना संभव नहीं है । हमारी सभ्यता और संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है । हमारी इस प्राचीन और गौरवशाली संस्कृति का मूल आधार प्रकृति और पुरुष कि एक दूसरे पर निर्भरता या यह कह सकते है कि मनुष्य द्वारा प्रकृति को देवतुल्य मानकर पूजना है । यदि हम वैदिक काल की बात करे तो विश्व कल्याण के लिए जब शांति पाठ किया जाता है तो उसमें भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि मनुष्य ईश्वर से भी प्रकृति कि शांति की बात करता है ।

शान्ति मंत्र
ॐ द्यौः शान्ति रन्तरिक्षँ शान्तिः
पृथिवी शान्ति रापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयः शान्ति र्विश्वे देवाः शान्ति र्ब्रह्म शान्तिः
सर्वँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

यजुर्वेद के इस शांति पाठ मंत्र के जरिये साधक ईश्वर से शांति बनाये रखने की प्रार्थना करता है। इस मंत्र के जरिये कुल मिलाकर जगत के समस्त जीवों, वनस्पतियों और प्रकृति में शांति बनी रहे इसकी प्रार्थना की गई है। इसका शाब्दिक अर्थ लें तो उसके अनुसार इसमें यह गाया है कि हे परमात्मा स्वरुप शांति कीजिये, वायु में शांति हो, अंतरिक्ष में शांति हो, पृथ्वी पर शांति हों, जल में शांति हो, औषध में शांति हो, वनस्पतियों में शांति हो, विश्व में शांति हो, सभी देवतागणों में शांति हो, ब्रह्म में शांति हो, सब में शांति हो, चारों और शांति हो, हे परमपिता परमेश्वर शांति हो, शांति हो, शांति हो ।

इसलिए हमारे ऋषि मुनियों ने हमारी जीवन शैली को भी प्रकृति के अनुसार ढाल दिया । हमारी सम्पूर्ण जीवन चर्या मौसम आधारित है । जिस तरह इन मौसम में प्रकृति में परिवर्तन होता है, उसी तरह हमारे शरीर और मन-मस्तिष्क में भी परिवर्तन होता है। और, जिस तरह प्रकृति के तत्व जैसे वृक्ष-पहाड़, पशु-पक्षी आदि सभी उस दौरान प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए उससे होने वाली हानि से बचने का प्रयास करते हैं उसी तरह मानव को भी ऐसा करने की ऋषियों ने सलाह दी। उस दौरान ऋषियों ने ऐसे त्योहार और नियम बनाए जिनका कि पालन करने से व्यक्ति सुखमय जीवन व्यतीत कर सके ।

हम गर्व से यह कह सकते है कि प्रकृति का पूजन ही हमारे गौरवशाली अतीत का उपहार था । भौतिक विकास के पीछे दौड़ रही दुनिया को अहसास हुआ कि चमक-धमक के फेर में क्या कीमत चुकाई जा रही है । आज ऐसा कोई देश नहीं है जो पर्यावरण संकट पर मंथन नहीं कर रहा हो । भारत भी चिंतित है । लेकिन, जहां दूसरे देश भौतिक चकाचौंध के लिए अपना सबकुछ लुटा चुके हैं, वहीं हमारे पास आज भी बहुत कुछ बाकी है । पश्चिम के देशों ने प्रकृति को हद से ज्यादा नुकसान पहुंचाया है। पेड़ काटकर जंगल के कांक्रीट खड़े करते समय उन्हें अंदाजा नहीं था कि इसके क्या गंभीर परिणाम होंगे? प्रकृति को नुकसान पहुंचाने से रोकने के लिए पश्चिम में मजबूत परंपराएं भी नहीं थीं। प्रकृति संरक्षण का कोई संस्कार अखण्ड भारतभूमि को छोड़कर अन्यत्र देखने में नहीं आता है । जबकि सनातन परम्पराओं में प्रकृति संरक्षण के सूत्र मौजूद हैं। भारतवर्ष में प्रकृति पूजन को प्रकृति संरक्षण के तौर पर मान्यता है। भारत में पेड़-पौधों, नदी-पर्वत, ग्रह-नक्षत्र, अग्नि-वायु सहित प्रकृति के विभिन्न रूपों के साथ मानवीय रिश्ते जोड़े गए हैं। पेड़ की तुलना संतान से की गई है तो नदी को मां स्वरूप माना गया है।

ग्रह-नक्षत्र, पहाड़ और वायु देवरूप माने गए हैं। प्राचीन समय से ही भारत के वैज्ञानिक ऋषि-मुनियों को प्रकृति संरक्षण और मानव के स्वभाव की गहरी जानकारी थी। वे जानते थे कि मानव अपने क्षणिक लाभ के लिए कई मौकों पर गंभीर भूल कर सकता है। अपना ही भारी नुकसान कर सकता है। इसलिए उन्होंने प्रकृति के साथ मानव के संबंध विकसित कर दिए। ताकि मनुष्य को प्रकृति को गंभीर क्षति पहुंचाने से रोका जा सके। यही कारण है कि प्राचीन काल से ही भारत में प्रकृति के साथ संतुलन करके चलने का महत्वपूर्ण संस्कार है।

यह सब होने के बाद भी भारत में भौतिक विकास की अंधी दौड़ में प्रकृति पददलित हुई है। लेकिन, यह भी सच है कि यदि ये परंपराएं न होतीं तो भारत की स्थिति भी गहरे संकट के किनारे खड़े किसी पश्चिमी देश की तरह होती। हमारी परंपराओं ने कहीं न कहीं प्रकृति का संरक्षण किया है। जंगल को हमारे ऋषि आनंददायक कहते हैं- 'अरण्यं ते पृथिवी स्योनमस्तु।' यही कारण है कि जीवन के चार महत्वपूर्ण आश्रमों में से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास का सीधा संबंध वनों से ही है। हम कह सकते हैं कि इन्हीं वनों में हमारी सांस्कृतिक विरासत का सम्वर्धन हुआ है। हिन्दू संस्कृति में वृक्ष को देवता मानकर पूजा करने का विधान है। वृक्षों की पूजा करने के विधान के कारण हिन्दू स्वभाव से वृक्षों का संरक्षक हो जाता है। सम्राट विक्रमादित्य और अशोक के शासनकाल में वन की रक्षा सर्वोपरि थी। चाणक्य ने भी आदर्श शासन व्यवस्था में अनिवार्य रूप से अरण्यपालों की नियुक्ति करने की बात कही है।

हमारे महर्षि यह भली प्रकार जानते थे कि पेड़ों में भी चेतना होती है। इसलिए उन्हें मनुष्य के समतुल्य माना गया है । उद्दालक ऋषि अपने पुत्र श्वेतकेतु से आत्मा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वृक्ष जीवात्मा से ओतप्रोत होते हैं और मनुष्यों की भाँति सुख-दुःख की अनुभूति करते हैं। हमारे दर्शन में एक वृक्ष की मनुष्य के दस पुत्रों से तुलना की गई है-

'दशकूप समावापीः दशवापी समोहृदः।
दशहृद समःपुत्रो दशपत्र समोद्रुमः।। '

घर में तुलसी का पौधा लगाने का आग्रह भी किया जाता है । यह आज सिद्ध हो गया है। तुलसी का पौधा मनुष्य को सबसे अधिक प्राणवायु ऑक्सीजन देता है। तुलसी के पौधे में अनेक औषधीय गुण भी मौजूद हैं। पीपल को देवता मानकर भी उसकी पूजा नियमित इसीलिए की जाती है क्योंकि वह भी अधिक मात्रा में ऑक्सीजन देता है। परिवार की सामान्य गृहिणी भी अपने अबोध बच्चे को समझाती है कि रात में पेड़-पौधे को छूना नहीं चाहिए, वे सो जाते हैं, उन्हें परेशान करना ठीक बात नहीं। वह गृहिणी परम्परावश ऐसा करती है। उसे इसका वैज्ञानिक कारण नहीं मालूम । रात में पेड़ कार्बन डाइ ऑक्सीजन छोड़ते हैं, इसलिए गाँव में दिनभर पेड़ की छांव में बिता देने वाले बच्चे-युवा-बुजुर्ग रात में पेड़ों के नीचे सोते भी नहीं हैं। देवों के देव महादेव तो बिल्व-पत्र और धतूरे से ही प्रसन्न होते हैं। यदि कोई शिवभक्त है तो उसे बिल्वपत्र और धतूरे के पेड़-पौधों की रक्षा करनी ही पड़ेगी। वट पूर्णिमा और आंवला नवमी का पर्व मनाना है तो वटवृक्ष और आंवले के पेड़ धरती पर बचाने ही होंगे। सरस्वती को पीले फूल पसंद हैं। धन-सम्पदा की देवी लक्ष्मी को कमल और गुलाब के फूल से प्रसन्न किया जा सकता है। गणेश दूर्वा से प्रसन्न हो जाते हैं। हिन्दू धर्म के प्रत्येक देवी-देवता भी पशु-पक्षी और पेड़-पौधों से लेकर प्रकृति के विभिन्न अवयवों के संरक्षण का संदेश देते हैं।

जलस्रोतों का भी हमारे जीवन में बहुत महत्व है। ज्यादातर गांव-नगर नदी के किनारे पर बसे हैं। ऐसे गांव जो नदी किनारे नहीं हैं, वहां ग्रामीणों ने तालाब बनाए थे। बिना नदी या ताल के गांव-नगर के अस्तित्व की कल्पना नहीं है। चार वेदों में से एक अथर्ववेद में बताया गया है कि आवास के समीप शुद्ध जलयुक्त जलाशय होना चाहिए। जल दीर्घायु प्रदायक, कल्याणकारक, सुखमय और प्राणरक्षक होता है। शुद्ध जल के बिना जीवन संभव नहीं है। यही कारण है कि जलस्रोतों को बचाए रखने के लिए हमारे ऋषियों ने इन्हें सम्मान दिया। पूर्वजों ने कल-कल प्रवाहमान सरिता गंगा को ही नहीं वरन सभी जीवनदायनी नदियों को माँ कहा है। हिन्दू धर्म में अनेक अवसर पर नदियों, तालाबों और सागरों की मां के रूप में उपासना की जाती है।

इसी तरह हमारे पूर्वजों ने जीव-जन्तुओं के महत्व को पहचानकर उनकी भी देवरूप में अर्चना की है। मनुष्य और पशु परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर हैं। सनातन धर्म में गाय, कुत्ता, बिल्ली, चूहा, हाथी, शेर और यहां तक की विषधर नागराज को भी पूजनीय बताया है। प्रत्येक परिवार में पहली रोटी गाय के लिए और आखिरी रोटी कुत्ते के लिए निकाली जाती है। चींटियों को भी आटा डालते हैं। चिड़ियों और कौओं के लिए घर की मुंडेर पर दाना-पानी रखा जाता है। पितृपक्ष में तो काक को बाकायदा निमंत्रित करके दाना-पानी खिलाया जाता है। इन सब परम्पराओं के पीछे जीव संरक्षण का संदेश है। हम गाय को माँ कहते है । उसकी अर्चना करते है।

इस विवेचन से हम सर्व रूप में यह कह सकते है कि प्रकृति ईश्वर का दिया गया सबसे अनमोल वरदान है. प्रकृति ही हमारे जीवन का मुख्य आधार है जो हमें प्राणवायु, जल, खाद्य एवं हमारी जिंदगी की सभी आवश्यकताओं को पूरा करती है. प्रकृति के बिना हमारे जीवन की कल्पना मुश्किल है. इसलिए हम सभी को प्रकृति के महत्व को समझना चाहिए एवं इसे बचाने के लिए प्रयास करने चाहिए ।

इस सब का आशय यह कि प्रकृति हमें सेती है, हमें पालती है, हमारी जननी है, उसके सम्मान के प्रति यदि हम उसकी वंदना नियमित करें और उस पावन शक्ति की आराधना हमारे जीवन दर्शन में व्याप्त हो तो हम उसे नुकसान पहुंचाने से पहले हजार बार सोंचेंगे । हम सौभाग्य शाली है कि राजस्थान के दक्षिण में अरावली कि उपत्यकाओं से आच्छादित हमारा क्षेत्र प्रकृति के वरदान से समृद्ध है । यहाँ के निवासी सनातन काल से प्रकृति के पूजक है । उनकी परम्पराएं, जीवन शैली, पर्व, त्योहार सब प्रकृति की देन है और प्रकृति पर आधारित है । अतः जीवन दायिनी प्रकृति का पूजन करके ही हम प्रकृति और पुरुष के सनातनी संबंधों को जीवित रख सकते है और बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण को काम करके मानव के अस्तित्व पर उभरे प्रश्नचिन्ह को हटा सकते है ।

आ सब करी ने आपड़े कई सकंगा, गाई सकंगा अने हरख मनावी सकंगा के...
धनघड़ी धन भाग
धनघड़ी धन भाग रे जोवो मानवी राजी आज
रे मारे धनघड़ी धन भाग

*****

सतीश आचार्य
सुभद्रा सदन 4/59-प्रगतिनगर
कॉलेज रोड
बांसवाड़ा (राजस्थान)

•••• जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई की गतिविधियाँ ••••

हिरन

सभी पाठक साथी को जय गुरु !!

जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई हिरन में आने वाले अप्रैल माह में की जाने वाली गतिविधियों का क्रियान्वयन किया जायेगा । यह गतिविधियाँ गाँव में मौजूद जनजातीय स्वराज संगठन, उनके सक्षम समूह, ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समितियों द्वारा की जायेगी।

ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति की मासिक बैठके

इस माह इकाई के 356 गाँव में ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति की मासिक बैठक का आयोजन किया जाएगा। इन बैठकों में ग्राम चोपाल होगी जिसमे गाँव के विभिन्न मुद्दों पर लोग जिम्मेदारी लेंगे। इस बैठक में अलग-अलग हितधारक जैसे सरपंच, टीचर,वार्डपंच, आशा, सहायिका एवं अन्य लोग शामिल होंगे जिसके कारण गाँव की प्राथमिकता सबकी सहमती के साथ अच्छे से तय की जा सके । इसी के साथ गाँव के लोग अपने-अपने हिसाब से जिम्मेदारी लेंगे जिसके हिसाब से कार्य को प्रगति मिले।

सक्षम समूह की सच्ची खेती परसहभागी सीख चक्र की बैठक

इस माह सक्षम समूह की महिला बहनों क साथ स्वराज मित्र द्वारा सहभागी सीख चक्र की बैठकों का आयोजन किया जायेगा जल, जंगल, जमीन, जानवर, बीज पर चर्चा निम्नलिखित विषयो पर होगी।

- **जलः**-जल संरक्षण हेतु महिलाओं के साथ मल्चिंग के बारे में चर्चा होगी जिसमे अलग-अलग प्रकार के मल्चिंग के तरीको पर बात जैसे खाखरे के पत्ते आदि जिससे जमीन में नमी ज्यादा समय तक बनाई जा सके।
- **जंगलः**-जंगल के बचाव और दैनिक उपयोग के ऊपर चर्चा होगी जिसमे हर प्रकार के पौधे और उनके उपयोग पर बात की जावेगी । इस चर्चा के बाद उनके संरक्षण और रख- रखाव के तरीको पर कार्ययोजना का निर्माण किया जायेगा ।
- **जमीनः**- जल संरक्षण के लिए इस माह महिलाओं के साथ मेडबंदी, कंटूर ट्रेंच को लेकर बात होगी । इस विषय में उनके साथ तय किया जाएगा की नरेगा के माध्यम से किस प्रकार इन कामो को मिट्टी के कटाव को बचाने के लिए करवाया जाये। साथ में कम्पोस्टिंग के ऊपर भी चर्चा होगी जिसमे विभिन्न प्रकार के तरीको के बारे में महिलाओं को बताया जाएगा।
- **जानवरः**-मवेशियों के उत्तम प्रबंधन के लिए इस माह पशुओं के लिए उपयुक्त मात्रा में चारों के इंतज़ाम करने पर होगी । इसमें प्रत्येक महिला को उसके घर में पशुओं की संख्या के हिसाब से जरूरत में लगने वाला चारे का किस प्रकार इंतज़ाम होगा उस पर बताया जाएगा।
- **बीजः**-इस माह के अंत तक कई सब्जियों को सुखा कर रखने पर बात होगी। साथ में कई ऐसे बीज जिनको सहेजकर रखना है उसके लिए महिलाओं को बताया जाएगा।
- जायद में मुंग की फसल में की जाने वाली शस्य क्रियाये एवं देखभाल पर चर्चा की जाएगी।

इसी के साथ जायद में होने वाली फसलो के लिए किस प्रकार खेतो का प्रयोग करना है उस पर चर्चा होगी । इन अलग-अलग विषय पर चर्चा के बाद महिलाओं को ये जानकारी देकर आगे पहुँचने पर भी प्रेरित किया जाएगा जिससे जानकारी का विस्तार होगा ।

जनजातीय स्वराज संगठनो की मासिक बैठके व वार्षिक कार्ययोजना का निर्माण करना

इस माह इकाई के 9 जनजातीय स्वराज संगठनो की मासिक बैठक का आयोजन होगा। पिछले चर्चा और अनुभव के आधार पर संगठन आने वाले महीने में रोजगार के कमी के कारण हो रहे पलायन पर चर्चा करेंगे।वित्त वर्ष के आखरी माह होने पर लोग बस 30 दिन का कार्य दिवस ले पाएंगे , सभी को लाभ दिलवाने का इस चर्चा में समाधान के रूप में संगठन और ग्राम स्तरीय समिति द्वारा सभी को नरेगा में 100 दिन का रोजगार दिलवाने पर बात होगी । इस उद्देश्य के लिए संगठन द्वारा रणनीति बनाई जाएगी और आगे आने वाले माह में इसपर काम होगा ।इसी के साथ इस माह साल भर के संगठन के माध्यम से किये जाने वाले कार्यो को एक वार्षिक कार्य योजना का रूप देना एवं रणनीति तैयार करना साथ ही संगठन के सदस्यों एवं पदाधिकारियों की जिम्मेदारी नियोजित करना आदि का कार्य किया जायेगा ।

किशोरियों द्वारा गर्भवती महिलाओं, धात्री माताओं और किशोरियों के साथ बैठके

किशोरी एवं महिला स्वास्थ्य को गाँव में आगे बढ़ने के लिए इकाई के सज्जनगढ़ ब्लॉक के 50 गाँव में किशोरियों बालिकाओं द्वारा गर्भवती और धात्री माताओं के साथ बैठक की जाएगी जिसमे उन्हें पोषण, साफ़-सफाई, आंगनवाडी-स्वास्थ्य केंद्र की विभिन्न सुविधाओं आदि पर जागरूक करेंगे। इसमें स्थानीय आंगनवाडी कार्यकर्ता, ANM, आशा की भी मदद लेकर कार्य किया जाएगा।

सोहन नाथ जोगी
यूनिट लीडर - हिरन

माही

।। मेरे समुदाय परिवारो को राम-राम ।।

साथियो बड़ा हर्ष का विषय है इस माह हम हमारे पारम्परिक त्यौहार होली जिसमे हर वागड़वासी की आस्था एवं उल्लास जुड़ा हुआ है । इस त्यौहार में हर वागड़वासी चाहे कही भी जग में निवास करता हो परन्तु होली का त्यौहार हमारे वागड़ अंचल में मनाना ही पसंद करेगा । साथियो अगर बात त्यौहारो की जाये तो हमारे यहाँ त्यौहारों का विशेष महत्व रहता है, इस माह में सभी समुदाय परिवार गेहू की कटाई में व्यस्त रहेंगे परन्तु हमें मिलकर हमारे जनजातीय स्वराज संगठन की वार्षिक कार्य योजना को लेकर भी जनजातीय स्वराज संगठन की मासिक बैठक में चर्चा की जाएगी ।

साथियों इस माह में हमारे इकाई से विभिन्न संगठनो का वार्षिक कार्य योजना एवं विगत वर्ष की प्रगति पर दो दिवसीय कार्यक्रम कहे या संगठनो का आमुखीकरण कहे । जिसमे वर्तमान की स्थिति हमारा संगठन स्थानीय समस्याओ को समझ कर इसको किस प्रकार से खंड अथवा जिला स्तर पर अपनी बात को रखने में सक्षम दिख रहा है इस क्रम में इस बार हमारे विभिन्न संगठनो ने आगामी वर्ष की कार्ययोजना भी तय की है जो इस माह में आपके साथ चर्चा एवं इस पर आगामी रूपरेखा आपके साथ बैठकर तय करेंगे।

सच्चा स्वराज - जनजातीय स्वराज संगठनो के द्वारा काम करने की रणनीतिः इस संबंध में सभी 9 जनजातीय स्वराज संगठन के सदस्यों द्वारा निर्णय लिया गया और जिम्मेदारी संगठन के अध्यक्ष, सचिव व उपाध्यक्ष को दी गई साथ ही सम्पूर्ण जानकारी एकत्रित करवाई जाये और यह जानकारी जनजातीय स्वराज संगठन की मासिक बैठक में साझा की जाये।

वाग़्धारा द्वारा दिये गये सामग्री पर चर्चाः बैठक में सच्चा स्वराज, सच्चा बचपन व सच्ची खेती पर चर्चा की गई स्वराज संगठनों द्वारा किया जाने वाला कार्य इस माह हलमा को अभ्यास में लाने के लिए गेहूँ कटाई के लिए मियांसा गांव में ही हलमा किया जाना है। एवं हलमा परम्परा को आगे बढाते हुए 40 गांवों तक ले जाना है इसी प्रकार हलमा 9 स्वराज संगठनो के द्वारा किया जा रहा है। एवं वर्तमान समय में जनजातीय समुदाय मे फिजुल खर्च पर पांबदी लगाने के संबंध में सभी स्वराज संगठनों के माध्यम से आवाज उठाई जा रही है।

सच्चा बचपन - इस बार साथियो हमारे क्षेत्र में हमने विशेष कार्यक्रमों जैसे की सामाजिक सुरक्षा के कैंप हो या कोई बच्चा किसी भी प्रकार से अभी भी लाभन्वित नहीं हुआ है तो हमने अपने ग्राम स्तर पर ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति ,सक्षम समूह हो अथवा 40 गाँवो के जनजातीय स्वराज संगठन के माध्यम से अधिक से अधिक परिवारों या वंचित लाभार्थी को योजना से जोड़ा एवं वर्तमान में जो इस कैंप के दौरान किन्ही कारणों से वंचित रह गया हो तो भी उस पर कार्य प्रगति पर है साथियों आपको बताते हुए बड़ा हर्ष हो रहा है की आपके साथ मिलकर विगत 02 माह में हम 3500 वंचित लाभार्थियों को लाभ पहुंचाने में सक्षम हुए है साथ ही आगे भी यह क्रम जारी रहेगा ।

साथ ही साथियों इस बार आपसे हम हर स्तर के संगठन से वार्तालाप करते है की हमारा गांवों में अब बाल अपराध ,बाल श्रम नहीं होने देंगे इसमें सिर्फ हमारा प्रयास सार्थक नहीं होगा साथियों आपको भी आगे आकर अपने गांवों में जो भी बाल श्रम देखे उसको रोकना होगा और एक मिसाल पेश करनी होगी की हमारे गांव में एक भी बाल श्रम नहीं है या हमारा गांव बाल श्रम मुक्त है ... उम्मीद है हमारे संगठन के साथ मिलकर हमारे स्थानीय जन प्रतिनिधि इसको सार्थक बनाने में सहयोग करेंगे... आज का हमारा बच्चा कल के भारत का भविष्य बनेगा और उसमे हम सब मिलकर सहयोग करेंगे.....।।

सच्ची खेती - साथियों हर गाँव में 20 महिलाओ के सक्षम समूह के साथ मिलकर हम बात खेती की करते है जिसमे आप सभी का सहयोग हमेशा रहा है और रहेगा साथियों आज हम 1000 गाँवो में 20000 महिला किसान अथवा परिवार के साथ मिलकर सच्ची खेती के घटक पर सीधा सवांद करते है जिसमे अगर परिवर्तन की बात करे तो आज हमारे हर महिला किसान के यहा पर पोषण वाटिका देखने को मिलेगी साथ ही यह महिलाए स्थानीय वनस्पतियों से किस प्रकार से कोनसी दवाई बनेगी एवं किस प्रकार से उपयोगी होगी इसकी पहचान बना पाने में परिपक्व दिखने लगी है । इसी क्रम में हमने इस बार पुनः हमारे जनजातीय स्वराज संगठनो के माध्यम से हर महिला को जायद हेतु मुंग एवं हर सक्षम समूह की महिला को सब्जी कीट पहुचाया है ताकि इन तीन से चार माह के अंतराल में सब्जी के माध्यम से खुद एवं अपने परिवार को पोषण दे पाए । साथियो इस रबी में हमने मिलकर हमारे देशी बीज को बचाने के लिए दौलत सिंह का गढ़ा में मक्का बीज हेतु तैयारी की थी जो अंतिम रूप में है और इस बार हम साथियों को पुनःखरीफ में मक्का बीज उपलब्ध होगा जिसको हम मिलकर बचाएँगे और अन्य किसानो तक पहुचाएंगे ।

साथियों कोरोना महामारी का पूर्णतया अन्त नहीं हुआ है जहा रहे मास्क लगाए लोगो से दो गज दुरी बनाए रखे.. सर्दी जुखाम बुखार आने पर पास के स्वास्थ केंद्र पर जाए " थोडीसी लापरवाही होगी भारी "

हेमन्त आचार्य
जे.एस.एस.एस.आई. लीडर, घाटोल

मानगढ़

!! हेत्ता वागड़ वासीयो ने जय गुरु !!

सबसे पहले तो आप सभी लोगों को रंगों के त्योहार होली की ढेर सारी शुभकामनाएं आशा करता हूँ की रंगों से भरे इस त्योहार ने आपके जीवन में भी खुशियों के रंग भरे होंगे और आपकी मनोकामनाएं पूरी हुई होंगी । तो हर माह की तरह इस माह भी हम आपके समक्ष अपने कार्यों एवं विचारों को इस पत्रिका के माध्यम से आपके साथ साझा करने आए हैं और हर बार की तरह जो कार्य हमने समुदाय के साथ मिलकर किये है उनको आपके सामने प्रस्तुत करते हैं।

संगठन के सदस्यों का प्रशिक्षण : संस्था का मानना है की समुदाय का विकास समुदाय के द्वारा ही पूर्ण हो सकता है इसलिए संस्था ने समुदाय के विकास के लिए संगठन बनाये है जो गाँव एवं पंचायत में विकास की प्रक्रिया में अहम् भूमिका निभाने का प्रयत्न करते है । इसी को ध्यान में रखते हुए संस्था ने संगठन के सदस्यों के लिए 2 दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया जो दिनांक 3 – 4 मार्च को हुआ , इस प्रशिक्षण का मूल उद्देशय संगठन के सदस्यों के साथ गाँव में मौजूद समस्याओं को पहचान कर उनका स्थानीय समाधान ढूंढना था साथ ही आगामी वर्ष 2021-22 के लिए जो कार्य उनको करना है उसकी एक कार्य योजना बनानी थी ताकि उसके अनुसार वो साल भर उन मुद्दों या समस्याओं पर कार्य कर सके । इस प्रशिक्षण के माध्यम से उन्होंने जमीनी एवं ठोस समस्याओं को पहचानना सीखा साथ ही कौन सी समस्याओं को प्राथमिकता दी जाये उसके बारे में भी विस्तार से जाना ।

ग्राम चोपाल की बैठक : हर माह हमारे स्वराज मित्रों एवं सहजकर्ता द्वारा गाँव में ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति एवं अन्य समुदाय लोगों के साथ ग्राम चोपाल की बैठकें की जाती हैं, ग्राम चोपाल की बैठक करने का मूल उद्देशय गाँव की समस्याओं को जानकर उनका स्थानीय समाधान ढूंढना है साथ ही गाँव के विकास के लिए जो मुद्दे हैं उस पर चर्चा कर अन्य गाँव वालों को जागरूक करना है । इस बदलते दौर में आज गाँव के लोग भी एक साथ बैठना भूल चुके हैं एवं अपनी निर्भरता या तो सरकार या फिर अन्य प्रभावी लोगों पर रख दी है। लोग एक जगह बैठ पाए और अपनी समस्याओं का हल खुद निकाल पाए इसी उद्देश्य से हमने ग्राम चोपाल की बैठकों का आयोजन किया है । इस माह की बैठक का बिंदु हमने हलमा रखा था जैसा हम सभी जानते है की अब कटाई शुरू हो गयी है और लोग अपने खेतों पर कटाई के लिए लग चुके हैं तो इसी संदर्भ में हमने हलमा पद्धति के बारे में गाँव वालों को जागरूक किया ताकि वो अपनी इस परम्परा को जिसे वो भूल रहे हैं उसे याद रखे और इसके लाभ से अपने खेती में आ रहे खर्चे को कम करे साथ ही आपसी मेल भाव को भी बढावा मिले जो की आदिवासी संस्कृति का एक मूल विचार है ।

सब्जी एवं मूंग के बीज का वितरण : वागड़ क्षेत्र ग्रीष्मकालीन मूंग खेती के लिए प्रसिद्ध है और इस खेती की इस क्षेत्र में कई फ़ायदे है-सबसे पहले तो यह एक कम दिनों में पकने वाली फसल है दूसरी मिट्टी की उर्वरक क्षमता को भी ये काफी बढ़ाती है और साथ ही एक अच्छी आय का स्त्रोत है ।इसी को ध्यान में रखते हुए संस्था ने भी कुछ ऐसे किसानो का चयन किया जो गर्मी में मूंग की खेती करते हैं और उनकी खेती की पैदावार बढ़ाने के लिए विकसित किस्म के मूंग बीज जो सरकार द्वारा प्रमाणित की हुई है वो उनको उपलब्ध करवाया ताकि उनकी पैदावार बढ़ पाए एवं अगले वर्ष वो अन्य किसानो को भी बीज साझा करे ताकि उन किसानो की भी पैदावार में बढ़ोतरी हो पाए । इसके अलावा संस्था ने 2700 परिवार को सब्जी के बीज भी उपलब्ध कराये ताकि जिन परिवार को पोषण की कमी होती है उनको पोषण सही समय पर मिल पाए और सच्ची खेती की जो बात संस्था करती है वो गाँव में परिवारों के पास हो और एक सुचांक के तौर पर वो गाँव के अन्य परिवार को भी इसके लिए प्रेरित करे और गाँव में एक स्वराज की धारणा आ पाए ।

रोहित स्मिथ
जे.एस.एस.एस.आई. लीडर, आनन्दपुरी

बाल विवाह एक सामाजिक कुप्रथा... इसकी रोकथाम में समुदाय की भूमिका !

प्रिय पाठकों जैसा की मासिक पत्रिका वातें वाग्धारा नी के दसवें अंक में आपने जाना की कोरोना महामारी की वजह से काफ़ी समय से स्कूल बंद थे जो की फ़रवरी - मार्च माह में 6 कक्षा से 12 कक्षा तक खुल गये थे तो उस समय हम सभी को मिलकर किन बातों का विशेष ख्याल रखना है ताकि हमारे बच्चें जब इतने अंतराल के बाद वापस से स्कूल जा रहे है तो उनको किसी भी प्रकार की कोई समस्या ना आए । इस माह हम इस पत्रिका का ग्यारवाँ अंक प्रकाशित कर रहे है, जिसमे सच्चा बचपन के तहत हम बात करेंगे बाल विवाह के सन्दर्भ में । जिसमें मुख्यतः हम बात करेंगे की क़ानूनी रूप से बच्चों की शादी की सही उम्र क्या है, बाल विवाह के क्या दुष्प्रभाव है और बच्चें कैसे इससे सबसे ज्यादा प्रभावित होते है और बाल विवाह को रोकने में सामुदायिक भूमिका क्या है ?

पाठकों जैसा की आप सभी जानते है की अभी गाँवो में खेतों से फसलों की

कटाई हो चुकी है और होली का त्यौहार भी मना चुके है । गत वर्ष जब हमने यह त्यौहार मनाया था उसके तत्काल बाद कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया में पैर पसार दिए और सभी जगह वहां की सरकारों द्वारा तालाबंधी मतलब लॉकडाउन की शुरुआत की गयी, जिससे हमारे जनजातीय समुदाय में भी नोतरा प्रथा के तहत होने वाले आयोजन नहीं हो सके, जिसमे मुख्य आयोजन हमारे समुदाय में होने वाली शादियाँ थी । आज एक वर्ष बाद वापस से होली का त्यौहार आ कर गया और लॉकडाउन भी नहीं था। इसलिए हम सभी में एक खासा उल्लास भी था। इस त्यौहार को लेकर, साथ ही साथ नोतरा के आयोजन के लिए भी । साथियों यह हम सभी भलीभांति जानते है की इस बार हमारे समुदाय में शादियों का आयोजन भी बड़े पैमाने पर होने वाला है जो की आखातीज तक चलेगा और यह एक अच्छी बात है की इतने समय अंतराल के बाद हम सभी इस सामाजिक आयोजन का आनंद भी लेंगे लैकिन यहाँ ध्यान देने की बात यह है की कही हम इस सामाजिक मान्यता के जरिये हमारे छोटे बच्चों से उनका बचपन ना छीन लें । आपको मेरी बात यहाँ थोड़ी अजीब सी लगी होगी की एक तरफ़ तो मैं कह रहा हूँ की इस बार हम सबको होली के साथ शादियों का भी आनंद लेना है और दूसरी तरफ़ मैं कह रहा हूँ की छोटे बच्चों से उनका बचपन ना छीन लें । इसलिए यहाँ पर मैं आप सबको स्पष्ट करना चाहूँगा की हमारे समुदाय में बहुत से परिवार अपनी आर्थिक परिस्थितियों का हवाला देकर बड़ों के साथ साथ परिवार में छोटे बच्चों की भी शादी करवा देते है, जो की सीधे तौर पर उन बच्चों को दिए गये अधिकारों का उल्लंघन तो है ही साथ ही जिस उम्र में उनको अभी पढ़ना है, खेलना कूदना है और अपने भविष्य की नीव रखनी है ऐसे मैं हमारे ही समुदाय के साथी उनकी कम उम्र में शादी करवाकर उनका बचपन छीन लेतें हैं । इसको हम क़ानूनी भाषा में बाल विवाह भी कहते है ।

इसी उम्र के और शादी के पक्ष में हमारे देश के अलग अलग समुदाय में अलग अलग मान्यता भी है, कोई समाज शादी की उम्र महिला के लिए 16 वर्ष और पुरुष के लिए 18 वर्ष समझता है, तो कोई समाज ये मानता है की बच्चो की शादी कम उम्र में ही कर देनी चाहिए जिससे वे अपने जीवन के अनुभव जल्द ही प्राप्त कर ले और अपनी जिम्मेदारियों को समझे । उनका ये मानना और उनकी ये सोच एक रुढ़िवादी सोच की ओर इशारा करती है, परन्तु वे इस बदलती दुनिया में अपने बच्चो और अपने आने वाले समाज की नींव को कमजोर करते है जिससे वो अनजान है, जिसका परिणाम वो कही न कही देखते भी है परन्तु उसे अनदेखा कर देते है ।

इसी का ही एक दुष्परिणाम बाल विवाह है, जिससे समुदाय का मानना है कि यदि बच्चो की शादी जल्द कर दी जाये तो अपने जिम्मेदारियों से जल्द अवगत हो जाते है और अपने जीवन को नई दिशा प्रदान करते है । समुदाय जाने अनजाने में इस अभिशाप को बढ़ावा देते है, उन्हें इसका परिणाम मालूम नही है और अपने बच्चो के जीवन को अंधकार में ढकेल देते है । इसी बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरूति या समस्या के कारण बच्चे अपने बचपन को नही जी पाते और विवाह जैसे बंधन में बंध जाते है और अपने छोटे से कंधे पर जिम्मेदारीयो के तले दब जाते है, जिससे वे न तो अपनी शिक्षा को पूरा कर पाते है और ना ही अपने भविष्य का निर्माण कर पाते है ।

बाल विवाह केवल लड़कों के लिए ही नही बल्कि लड़कियों के लिए भी अभिशाप है । लड़की का जब बाल विवाह हो जाता है, तब वो न तो अपनी

शिक्षा को पूरी कर पाती है जिससे समुदाय में बालिका शिक्षा का मुद्दा भी बढ़ जाता है । इसके साथ ही लड़कियां शादी के उपरांत कम उम्र में ही माँ बन जाती है, जिसके लिए न तो वे खुद और न ही उनका स्वास्थ्य तैयार रहता है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी शारीरिक कमजोरी भी बढती जाती है । इसी कमजोरी के कारण वो प्रसव के दौरान ही दम तोड़ देती है । जिससे अनेको बच्चो को अपनी माता के बगैर अपना जीवन बिताना पड़ता है जिससे हमारे समाज में ऐसी समस्या व्याप्त है जो बढ़ी संख्या में अनाथ बच्चो के रूप में समाज में है । साथ ही साथ जो बच्चें पैदा होते है वह शारीरिक रूप से बहुत कमजोर होते है जिसमें से बहुत से बच्चों की तो जन्म के समय या कुछ देर बाद मृत्यु तक हो जाती है और जो जीवित रहते है वह जीवन भर जिंदगी की कशमकश से लड़ते रहते हैं । इसी के साथ ही समाज में बच्चो के पालन पोषण में भी बहुत बढ़ा अंतर देखने को मिलता है । कम उम्र में विवाह लगभग हमेशा लड़कियों को शिक्षा या अर्थपूर्ण कार्यों से वंचित करता है जो उनकी निरंतर गरीबी का कारण बनता है। बालविवाह लिंगभेद, बीमारी एवं गरीबी के भंवरजाल में फंसा देता है।जब वे शारीरिक रूप से परिपक्व न हों,उस स्थिति में कम उम्र में लड़कियों का विवाह कराने से मातृत्व सम्बन्धी एवं शिशु मृत्यु की दरें अधिकतम होती हैं। बच्चों के अधिकारों के लिए दुनिया में काम करने वाली संस्था यूनिसेफ की "विश्व के बच्चों की स्थिति-2009"रिपोर्ट के अनुसार 20-24 वर्ष आयु वर्ग की भारत की 47 प्रतिशत महिलाएं कानूनी रूप से मान्य आयु सीमा-18 वर्ष से कम आयु में ब्याही गईं, जिसमें 56 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों से थीं। यूनिसेफ के अनुसार (विश्व के बच्चों की स्थिति-2009)विश्व के बाल विवाहों में से 40 प्रतिशत भारत में होते हैं।

हमारे आदिवासी समुदाय में भी ऐसी कुप्रथाए अधिक मात्रा में फैली हुयी है । हमारे समुदाय में लोग अपनी प्रतिष्ठा को दिखाने के लिए दो शादियाँ करते है । वो इसी चकाचोंध में बाल विवाह को बढ़ावा देते है, अपने रुतबे से कमजोर परिवार की लडकी से शादी कर लेते है । जिसके कुछ समय उपरांत उनकी मुर्त्यु हो जाती है और समाज में कम उम्र में विधवा होने की समस्या समाज में पनपती है, जो अपने आप में एक बड़ी सामाजिक समस्या है । बाल विवाह जैसी प्रथा हमारे समाज के लिए बहुत बड़ा अभिशाप है, जो धीरे धीरे हमारे समाज को खोखला कर रही है ।

बाल विवाह के कारणों पर यदि बात की जाये तो हम समझेंगे की कौनसे ऐसे कारण है जिससे समाज में बाल विवाह जैसी प्रथाए

शेष पृष्ट 3 पर

पनप रही है :
- गरीबी
- लड़कियों की शिक्षाका निचला स्तर
- लड़कियों को आर्थिक बोझ समझना
- सामाजिक प्रथाएं एवं परम्पराएं

बाल विवाह को रोकने के लिए सरकार ने अपनी ओर से भी कानूनों का निर्माण किया है, बाल विवाह पर रोक संबंधी कानून सर्वप्रथम सन् 1929 में पारित किया गया था। बाद में सन् 1949, 1978 और 2006 में इसमें संशोधन किए गए। इस समय विवाह की न्यूनतम आयु बालिकाओं के लिए 18 वर्ष और बालकों के लिए 21 वर्ष निर्धारित की गई है।जिससे वो इस अभिशाप को रोकने में कुछ हद तक सफल हुयी है ।

हमारे देश की सरकार द्वारा भी बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम, 2006 के तहत यह स्पष्ट किया गया है की बालक से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जिसने, यदि पुरुष है तो इक्कीस वर्ष की आयु पूरी नहीं की है और यदि महिला है तो अठारह वर्ष की आयु पूरी नहीं की है और उन दोनों को या दोनों में से किसी एक को शादी के बंधन में बाँधा जाता है तो यह एक प्रकार से कानून का उल्लंगन है और यह बाल विवाह की श्रेणी में आता हैं ।

कानून के तहत क़ानूनी सज़ा के प्रावधान :

बाल-विवाह करने वाले पुरुष वयस्क के लिए दंड

जो कोईअठारह वर्ष से अधिक आयु का पुरुष वयस्क होते हुए, बाल-विवाह करेगा, वह, कठोर कारावास सेजिसकी अवधि दो वर्ष तक की हो सकेगी,या जुर्माने से,जो एक लाख रुपए तक का हो सकेगा अथवा दोनों से दंडनीय होगा।

बाल-विवाह का आयोजन करने के लिए दंड

जो कोई किसी बाल-विवाह को संपन्न करेगा, संचालित करेगा, या आयोजित करेगा वह जब तक यह साबित न कर दे कि उसके पास यह विश्वास करने का कारण था कि वह विवाह बाल-विवाह नहीं थाकठोर कारावास सेजिसकी अवधि दो वर्ष तक की हो सकेगी,दंडनीय होगा और जुर्माने से भी,जो एक लाख रुपए तक का हो सकेगा, दंडनीय होगा।

बाल-विवाह के अनुष्ठान का संवर्धन करना और उसे अनुज्ञात करने के लिए दंड (1) जहां कोई बालक बाल-विवाह करेगा, वहां ऐसा कोई व्यक्ति जिसके भारसाधन में चाहे माता-पिता अथवा संरक्षक या किसी अन्य व्यक्ति के रूप में अथवा अन्य किसी विधिपूर्ण या विधिविरुद्ध हैसियत मेंबालक है, जिसके अंतर्गत किसी संगठन या व्यक्ति निकाय का सदस्य भी है, जो विवाह का संवर्धन करने के लिए कोई कार्य करता है या उसका अनुष्ठापित किया जाना अनुज्ञात करता है या उसका अनुष्ठान किए जाने से निवारण करने में उपेक्षापूर्वक असफल रहता है, जिसमें बाल-विवाह में उपस्थित होना या भाग लेना सम्मिलित है, कठोर कारावास से,जिसकी अवधिदो वर्ष तक की हो सकेगी, दंडनीय होगा और जुर्माने से भी, जो एक लाख रुपए तक का हो सकेगा,दंडनीय होगा : परंतु कोई स्त्री कारावास से दंडनीय नहीं होगी।

(2) इस धारा के प्रयोजनों के लिए,जब तक कि इसके प्रतिकूल साबित नहीं हो जाता है यह उपधारणा की जाएगी कि जहां अवयस्क बालक ने विवाह किया है वहां ऐसे अवयस्क बालक का भारसाधन रखने वाला व्यक्ति विवाह अनुष्ठापित किए जाने से निवारित करने में उपेक्षापूर्वक असफल रहा है।

बाल विवाह की रोकथाम हेतु सामुदायिक भूमिका :

1. गाँव स्तर पर बाल विवाह को रोकने में बाल पंचायत की भूमिका - बाल विवाह रोकने को लेकर समुदाय स्तर पर बच्चो के साथ संवाद हेतु बाल पंचायत का गठन कर बच्चों से सम्बन्धित समस्याओं को रोकने हेतु एक प्रयास समुदाय स्तर पर किया जा रहा है । बाल पंचायत के माध्यम से एक ऐसे वातावरण का निर्माण किया गया है, जिससे की समुदाय स्तर पर बच्चो से जुड़े मुद्दों को समझा जा सके साथ ही उनकी मानसिक परिस्थिति में भी वर्तमान परिपेक्ष्य को मजबूत किया जा सके । बाल पंचायत में बच्चे अपने से जुडी सामाजिक कुरीतियाँ जैसे –बाल विवाह, बाल श्रम, बाल हिंसा आदि समस्याओ पर अपनी जानकारी बढ़ाने की प्रक्रिया से जुड़े है । बाल पंचायत बच्चो को एक ऐसा वातावरण देती है जिससे वे अपनी समस्याओ को गहनता से अध्ययन करते है एंव उनके द्वारा वो अपनी बातों से अपने से जुडी समस्याओ पर समुदाय का ध्यान केन्द्रित करते है । बाल पंचायत में सभी बच्चे अपने ग्राम का प्रतिनिधित्व करते है और उस गाँव की ग्राम विकास एंव बाल अधिकार समिति में प्रत्येक माह अपनी भूमिका निर्धारित करते है । जिससे वे अन्य बच्चो की जानकारी को समिति में साझा कर समिति का ध्यान उस ओर खींचते है । इसके साथ यदि पंचायत के बच्चो के साथ उनसे जुड़े कानूनों पर भी बात की जाती है, जिससे वो उनके प्रति जागरूक होते है, जिसके परिणामस्वरूप वे बच्चो से जुड़े अपराध जैसे- बाल विवाह आदि पर अपनी चाइल्ड हेल्पलाइन (1098) के माध्यम से ऐसे कुरीतियों का नाश कर सकते है ।

बाल पंचायत के सदस्य यदि अन्य बच्चो को लेकर भी अपनी भूमिका समझते है तो उन्हें उनका प्रतिनिधित्व करने के लिए उनके साथ भी अपनी बैठको का संचालन करना चाहिए ।

ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति और बाल संरक्षण समिति की भूमिकाः बाल पंचायत द्वारा गाँव की ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति (VDCRC) एंव पंचायत स्तरीय बाल संरक्षण समिति (PLCPC) को अपने से जुडी सामाजिक कुरीतियों के प्रति अवगत कराना होगा । जिससे इन समितियों के सदस्य व समुदाय बच्चो से जुड़े मुद्दों के प्रति सजग हो जाये और इन मुद्दों को लेकर गंभीरता से अपना कार्य करे । यदि इनसमितियों के द्वारा अपना कार्य सही ढंग से नही किया जाता है या किसी भी प्रकार की मदद की आवश्यकता है तो वे चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 की मदद लेकर उनको प्रभावशाली बना सकती है । VDCRC बाल विवाह जैसे मुद्दे को लेकर स्थानीय स्तर पर एक बाल मैत्री वातावरण निर्माण को लेकर कार्य करें और लोगों को बाल विवाह से बच्चों की जिंदगी में पड़ने वाले कुप्रभावों से परिचित करवाएं । अगर बाल विवाह की सुचना प्राप्त होती है तो उसको रुकवाने के लिए तात्कालिक कार्यवाही VDCRC एवं PLCPC के द्वारा की जाएँ ।

माजिद खान,
प्रोग्राम लीड-बाल अधिकार
सच्चा बचपन, वाग्धारा

वाग्धारा संस्था द्वारा संचालित चाइल्ड लाइन के प्रयास 24 घंटों में विद्यालय में उपस्थित हुए व्याख्याता !

हेलो चाइल्ड लाइन हमारे राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मोना डूंगर में हम 423 समस्त बालक बालिकाएं विद्यालय में नियमित अध्ययनरत है। साथ ही साथ हमारे यहां पर विद्यालय में प्रधानाचार्य महोदय जी का पद भी रिक्त हैं एवं यहां पर हरि मोहन जी मीणा जो भूगोल विषय के व्याख्याता है तथा प्रधानाचार्य का दायित्व भी उन्ही को दिया गया है, परंतु समय-समय पर प्रधानाचार्य महोदय जी के द्वारा अवकाश लेकर एवं अपने गांव जयपुर में चले जाने के कारण हमारे समस्त विद्यालय में अध्ययनरत बालक बालिकाओं की पढ़ाई बाधित होती है हम लोगों ने पूर्व में भी कई बार इस संबंध में आगे अधिकारियों को अवगत करवाया परंतु कुछ कार्यवाही नहीं हुई। साथ ही साथ हमारे 11वीं एवं 12वीं कक्षा के प्रैक्टिकल भूगोल में अभी तक अध्यापन पूरा नहीं करवाया गया । वर्ष का पूरा सत्र होने को आ गया परंतु यहां पर पढ़ाई नाम मात्र की नहीं हुई है इसीलिए आप हमारी मदद करें हमारी आपसे आशा है । क्योंकि हमे चाइल्ड लाइन 1098 के प्रचार -प्रसार के दौरान बताया गया है की चाइल्ड लाइन पर सूचना आने के 24 घंटे के भीतर उस पर कार्यवाही की जाती है चाइल्ड लाइन के जिला समन्वयक परमेश पाटीदार द्वारा बताया गया कि गांगड़तलाई ब्लॉक के राजकीय माध्यमिक विद्यालय गांगड़तलाई की जानकारी आने पर टीम सदस्य कमलेश बुनकर, कांतिलाल यादव, बसुडा कटारा इत्यादि को इस समस्त विद्यालय में घटनाक्रम की जानकारी लेकर अवगत करवाने को कहा गया जिस पर टीम ने वहां पहुंच कर समस्त प्रकार की जानकारी ली तो सामने आया कि जहां कई दिनों से अवकाश पर चले जाने के कारण बालकों की पढ़ाई बाधित हो रही है साथ ही साथ विद्यालय में पढ़ाई के दौरान भी प्रधानाचार्य का पद रिक्त होने से कई और समस्याएं भी हो रही है चाइल्ड लाइन की टीम द्वारा केस इंटरवेंशन के दौरान श्रीमान मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक बांसवाड़ा इत्यादि को पत्र के माध्यम से अवगत करवा कर इस संबंध में कार्यवाही करवा कर चाइल्ड लाइन 1098 को निवेदन किया गया। जिस पर मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी के द्वारा बताया गया की आप सीधे गांगड़तलाई ब्लॉक के जिला शिक्षा अधिकारी को अवगत करवाकर जानकारी लीजिये जिस पर टीम द्वारा ब्लॉक के बसंत लाल जी सोनी को पत्र भेजकर बताया गया कि व्याख्याता हरिमोहन मीणा के बारे में जानकारी मिली जिस पर आप त्वरित विभागीय कार्यवाही कर हमे अवगत करावे इसी के साथ टीम को विभागीय पत्र के माध्यम से अवगत करवाया गया की हरि मोहन मीणा को तुरंत विद्यालय में दिनांक 19 मार्च 2021 को उपस्थित होने के निर्देश दिए गए। साथ ही साथ पूर्व में भी हरिमोहन के द्वारा लापरवाही होने के कारण नोटिस दिया जा चुका था आपका पत्र प्राप्त होते ही इस विषय में कार्यवाही कर दी गई है । इस विषय में उच्च अधिकारियों को भी अवगत करवा दिया गया है चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा की कार्यवाही का असर यह हुआ कि सूचना मै कार्यवाही होने के बाद विद्यालय समय में 19 मार्च 2021 को व्याख्याता हरिमोहन मीणा विद्यालय में उपस्थित हुए एवं अपनी बात को रखा गया । मैं मेरे परिवार में कुछ सामाजिक परेशानी होने की वजह से घर गया था साथ ही मेरे द्वारा विभाग को अवगत किया गया था एवं इस बार मुख्य आवास छोड़ने की सूचना भी दी थी परंतु मैं मानता हूं कि राजकीय माध्यमिक विद्यालय में मेरे अलावा कोई भी व्याख्याता यहां पर कार्यरत नहीं है एवं समस्त प्रकार के कार्य भी व्याख्याता के तौर पर और प्रधानाचार्य के दायित्व की जिम्मेदारी भी मुझ पर है अब में ज्यादा तो कुछ नही कहूँगा परन्तु मैं अब जानता हूं की परीक्षाएं नजदीक है इसीलिए मैं अब परीक्षा में बालकों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं होने दूंगा इसी के साथ बालकों के उज्जवल भविष्य को ध्यान में रखा जाएगा ।

टीम द्वारा बताया गया कि हमारे द्वारा समय-समय पर विद्यालय में जाकर बालकों को बताया जाता है कि आपको अगर किसी भी प्रकार की कोई परेशानी है तो आप तुरंत महिला एवं बाल विकास मंत्रालय भारत सरकार की सेवा 1098 जो एक टोल फ्री नंबर है उस पर तुरंत डायल करें एवं अपनी शिकायत दर्ज करवाएं वहां पर त्वरित कार्यवाही की जाएगी एवं आपको अवगत भी करवाया जाएगा इस मामले में भी यही हुआ बालकों की समस्या आने पर त्वरित प्रशासनिक अधिकारियों को अवगत करवाया गया एवं तुरंत वहां पर बालकों की समस्याओं का निदान हुआ है अंत में टीम के द्वारा सूचनाकर्ता बालको को अवगत करवाने पर संतोष जाहिर करते हुए कहा की हमने तो यह सोचा भी नहीं था कि हमारे द्वारा कई बार इस मामले को लेकर अधिकारियों को अवगत करवाया था परंतु कोई भी कार्यवाही नहीं हुई आपने तो सूचना देने के कुछ घंटो बाद ही कार्यवाही शुरु कर दी एवं हमारी समस्यायों का निदान हुआ और भूगोल विषय के व्याख्याता हरिमोहन जी को 24 घंटों के भीतर विद्यालय में उपस्थिति देनी पड़ी यह जानकर आज हम खुश है।

चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा
टीम सदस्य - **कमलेश बुनकर**

मनरेगा कार्य हेतु मांग पत्र की जानकारी

रोजगार मांग हेतु आवेदन पत्र फार्म नंबर 6 का प्रारूप
महात्मा गांधी नरेगा योजना में रोजगार मांग हेतु आवेदन
श्रीमान
सचिव, ग्राम पंचायत...../ कार्यक्रम अधिकारी, पंचायत समिति.....
महोदय,
महात्मा गांधी नरेगा योजना अंतर्गत मुझे/हमें निम्नानुसारअकुशल रोजगार उपलब्ध कराने की कृपा करावे L हम सभी 5 श्रमिक एक ही समूह में काम करने के इच्छुक हैं / आवेदन 5 से कम श्रमिकों का होने के कारण हमें किसी भी समूह में सम्मिलित कर लिया जावे L

क्रम संख्या	रोजगार चाहने वाले श्रमिक का नाम	परिवार के मुखिया का नाम	जॉब कार्ड नंबर	चाहे गये उनके रोजगार का विवरण	बैंक/ जी एस एस /पोस्ट ऑफिस मय शाखा का नाम एवं कोड संख्या	खाता नंबर	श्रमिक का हस्ताक्षर/अंगूठा निशानी
1							
2							
3							
4							
5							

प्राप्ति रसीद
क्रम संख्या-1पर दर्ज आवेदक श्री..... सहित अन्य..... आवेदकों का नरेगा योजनांतर्गत ग्राम पंचायत..... से रोजगार मांगने का आवेदन पत्र दिनांक..... को प्राप्त हुआ L

हस्ताक्षर

(सरपंच /वार्ड पंच/ ग्राम सेवक/ रोजगार सहायक/ अधिकृत आवेदन प्राप्तकर्ता
नाम.....
पदनाम.....

कार्य के प्रति आवेदन और मांग को दर्ज करना –

1.मनरेगा में प्रत्येक जॉबकार्ड धारी परिवार के सदस्य की उम्र यदि 18 वर्ष से अधिक हैं वों (अकुशलकार्य) मजदूरी के लिए मांग कर सकता हें
2.कार्य के लिए आवेदन में कम से कम 14 दिनों की मांग होनी चाहिए
3.एक जॉब कार्ड धारी परिवार 1 वित्तीय वर्ष में अधिकतम 100 दिन का रोजगार पाने का हकदार होगा।
4.रोजगार मांग पत्र ग्राम पंचायत में जमा किया निमंलिखित जाता हैं लेकिन यह आप ब्लॉक विकास अधिकारी को भी जमा करवा सकते हो जो केवल "वैकल्पिक विकल्प" के रूप में जमा होगा।
5.रोजगार के लिए दिए जा रहे मांग पत्र का होना आवश्यक हैं।
▪ परिवार के जॉब कार्ड की पंजीयन संख्या ▪ दिनांक का उल्लेख कब से कब तक रोजगार चाहिए ▪ रोजगार मांग के दिनों की संख्या
6.रोजगार की मांग सादे कागज या प्रिंटेड फार्म पर जो कि ग्राम पंचायत में निशुल्क उपलब्ध होता हैं । दोनों में से किसी भी प्रकार से कर सकते हैं
7.रोजगार के लिए मांग पत्र जमा करने के लिए आप अपने क्षेत्र में वार्ड पंच,आंगनवाड़ी कार्मिकों,विद्यालय के शिक्षकों,एस एच् जी ग्राम स्तरीय राजस्व कार्मिको,मनरेगा श्रमिक समूह को मांग पत्र जमा कर प्राप्ति रसीद प्राप्त कर सकते हैं।
8.सदस्य एक ही समय में एक से अधिक पखवाड़े के लिए रोजगार की मांग कर सकता हैं जिसमे सभी मांग पत्र में रोजगार पाने की दिनांक अलग-अलग होनी चाहिए
9.जिसको रोजगार दिया जा रहा हैं उसको ग्राम पंचायत द्वारा पत्र या फिर सार्वजानिक नोटिस जारी कर सूचित किया जायेगा। यदि किसी सदस्य ने अपने मोबाइल नम्बर दे रखा हैं तो उसको एसएमएस द्वारा सुचना प्राप्त हो जाएगी।
10.ग्राम पंचायत द्वारा सप्ताह में कम से कम एक बार ब्लॉक विकास अधिकारी को ये सुचना देनी होगी की पंचायत में कितने लोगों को रोजगार मिल रहा और कितने को नही और उसका क्या कारण हैं।
11.कार्य के लिए मांग पत्र जमा करने और प्राप्ति रसीद देने से मना करने पर मनरेगा की धारा 25 के अंतर्गत उल्लंघन माना जायेगा।

बेरोजगारी भत्ता –

1.यदि आवेदक को रोजगार के लिए मांग पत्र जमा करने के 15 दिन के भीतर रोजगार नही मिलता हैं तो वो बेरोजगारी भत्ते का हक़दार होगा ।
2.बेरोजगारी भत्ते के लिए प्रथम 30 दिनों के लिए मजदूरी दर का 25% होगा और बाकी के दिनों के लिए मजदूरी दर का 50 %रहेगा।
3. बेरोजगारी भत्ते का भुगतान 15 दिन के अंतर्गत आवेदक के बैंक खाते में होने का प्रावधान हैं
4.यदि ग्राम पंचायत द्वारा सूचित करने पर भी आवेदक उस कार्य को करने के लिए उपस्थित नही होता है तो वों अवधि जिसके किये मांग की गई है समाप्त हो जाती हैं और उसको बेरोजगारी भत्ते का हक नही मिलेगा।
5. बेरोजगारी भत्ते की मांग स्वयं आवेदक द्वारा मनरेगा वेबसाइट पर या फिर किसी ई-मित्र पर जा कर आवेदन कर के कर सकता हैं
6.आवेदक एक बार बेरोजगारी भत्ते का आवेदन करने के 3-माह तक दोबारा आवेदन नही कर सकता हैं।
7. बेरोजगारी भत्ते के लिए आवेदक को प्राप्ति रसीद लेना आवश्यक हैं ।

धनराज कुमावत
कार्यक्रम अधिकारी, सच्चा स्वराज, कुशलगढ़ इकाई

महुआ

महुआ वागड़ अंचल का एक महत्वपूर्ण पेड़ है और यहाँ की संस्कृति का हिस्सा है | लेकिन जलवायु परिवर्तन के साथ – साथ जंगल नष्ट होने के कारण आज यह पेड़ यहाँ विलुप्त होता जा रहा है | इस लेख में मैं आप सभी को इसे बचाने की अपील करता हूँ एवं आशा करता हूँ कि आगामी मानसून मे आप सभी महुआ का एक – एक पेड़ जरुर लगायेंगे ताकि पुरखो के इस खजाने को आप आगामी पीढ़ी को दे सको | आओ जानते है इसके गुणों के बारे में, यह एक भारतीय उष्णकटिबन्धीय वृक्ष है जो उत्तर भारत के मैदानी इलाकों और जंगलों में बड़े पैमाने पर पाया जाता है। यह एक तेजी से बढ़ने वाला वृक्ष है जो लगभग 25 मीटर की ऊँचाई तक बढ़ सकता है। इसके पत्ते आमतौर पर वर्ष भर हरे रहते हैं। यह पादपों के सपोटेसी परिवार से सम्बन्ध रखता है। यह शुष्क पर्यावरण के अनुकूल ढल गया है, यह मध्य भारत के उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन का एक प्रमुख पेड़ है।

प्रजातियाँ

भारत में इसकी बहुत सारी प्रजातियां पाई जाती हैं। दक्षिणी भारत में इसकी लगभग 12 प्रजातियां पाई जाती हैं जिनमें 'ऋषिकेश', 'अश्विनकेश', 'जटायुपुष्प' प्रमुख हैं। ये महुआ के मुकाबले बहुत ही कम उम्र में 4-5 वर्ष में ही फल-फूल देने लगते हैं। इसका उपयोग सवगंध बनाने के लिए लाया जाता है तथा इसके पेड़ महुआ के मुकाबले कम उचाई के होते हैं।

फूल

इसकी पत्तियाँ फूलने के पहले फाल्गुन-चैत्र में झड़ जाती हैं। पत्तियों के झड़ने पर इसकी डालियों के सिरों पर कलियों के गुच्छे निकलने लगते हैं जो कूर्ची के आकार के होते है। इसे महुए का कुचियाना कहते हैं। कलियाँ बढ़ती जाती है और उनके खिलने पर कोश के आकार का सफेद फूल निकलता है जो गुदारा और दोनों ओर खुला हुआ होता है और जिसके भीतर जीरे होते हैं। यही फूल खाने के काम में आता है और 'महुआ' कहलाता है। महुए का फूल बीस-बाइस दिन तक लगातार टपकता है। महुए के फूल में चीनी का प्रायः आधा अंश होता है, इसी से पशु, पक्षी और मनुष्य सब इसे चाव से खाते हैं। इसके रस में विशेषता यह होती है कि उसमें रोटियाँ पूरी की भाँति पकाई जा सकती हैं। इसका प्रयोग हरे और सूखे दोनों रूपों में होता है। हरे महुए के फूल को कुचलकर रस निकालकर पूरियाँ पकाई जाती हैं और पीसकर उसे आटे में मिलाकर रोटियाँ बनाते हैं। जिन्हें 'महुअरी' कहते हैं। सूखे महुए को भूनकर उसमें पोस्त के दाने आदि मिलाकर कूटते हैं। इस रूप में इसे 'लाटा' कहते हैं। इसे भिगोकर और पीसकर आटे में मिलाकर 'महुअरी' बनाई जाती है। हरे और सूखे महुए लोग भूनकर भी खाते हैं। गरीबों के लिये यह बड़ा ही उपयोगी होता है। यह गायों, भैंसों को भी खिलाया जाता है जिससे वे मोटी होती हैं और उनका दूध बढ़ता है। इससे शराब भी खींची जाती है। महुए की शराब को संस्कृत में 'माध्वी' और आजकल के गँवरा 'ठर्रा' कहते हैं। महुए का सूखा फूल बहुत दिनों तक रहता है और बिगड़ता नहीं।

फल

इसकाफल परवल के आकार का होता है और 'डोला' कहलाता है। इसे छीलकर, उबालकर और बीज निकालकर तरकारी (सब्जी) भी बनाई जाती है।

बीज

फल के बीच में एक बीज होता है जिससे तेल निकलता है। वैद्यक में महुए के फूल को मधुर, शीतल, धातु-वर्धक तथा दाह, पित्त और बात का नाशक, हृदय को हितकर औऱ भारी लिखा है। इसके फल को शीतल, शुक्रजनक, धातु और बलबंधक, वात, पित्त, तृपा, दाह, श्वास, क्षयी आदि को दूर करनेवाला माना है। छाल रक्तपितनाशक और व्रणशोधक मानी जाती है। इसके तेल को कफ, पित्त और दाहनाशक और सार को भूत-बाधा-निवारक लिखा है।

महुआ के बीज स्वस्थ वसा का अच्छा स्रोत हैं। इसका इस्तेमाल मक्खन बनाने के लिए किया जाता है। हमारे वागड़ में महुआ का तेल खाद्य तेल के रूप में उपयोग किया जाता है |

उपयोग

महुआ के हर हिस्से में विभिन्न पोषक तत्व मौजूद हैं। गर्म क्षेत्रों में इसकी खेती इसके डोला (तैलीय) बीजों, फूलों और लकड़ी के लिये की जाती है। कच्चे फलों की सब्जी भी बनती है। पके हुए फलों का गूदा खाने में मीठा होता है। प्रति वृक्ष उसकी आयु के अनुसार सालाना 20 से 200 किलो के बीच बीजों का उत्पादन कर सकते हैं। इसके तेल का प्रयोग (जो सामान्य तापमान पर जम जाता है) त्वचा की देखभाल, साबुन या डिटर्जेंट का निर्माण करने के लिए और वनस्पति मक्खन के रूप में किया जाता है। ईंधन तेल के रूप में भी इसका प्रयोग किया जाता है। तेल निकलने के बाद बचे इसके खल का प्रयोग जानवरों के खाने और उर्वरक के रूप में किया जाता है। इसके सूखे फूलों का प्रयोग मेवे के रूप में किया जा सकता है। इसके फूलों का उपयोग भारत के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में शराब के उत्पादन के लिए भी किया जाता है। कई भागों में पेड़ को उसके औषधीय गुणों के लिए उपयोग किया जाता है, इसकी छाल को औषधीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग किया जाता है। कई आदिवासी समुदायों में इसकी उपयोगिता की वजह से इसे पवित्र माना जाता है।

महुआ की शराब

महुआ के फूलों से शराब बनायी जाती है। इसे संस्कृत में 'माध्वी' और ग्रामीण क्षेत्रों में आजकल 'ठर्रा' कहते हैं। महुआ का शराब भारत के अनेक आदिवासी क्षेत्रों में बहुत लोकप्रिय पेय है।महुआ का फूल जब पेड़ से पूरी तरह से पक कर गिरता है, उसके बाद इस फूल को पूरी तरह से सुखाया जाता है। इसके बाद सभी फूलों को बर्तन में पानी में मिलाकर तथा इसमें अवश्यकतनुसार विभिन्न प्रकार के पेड़ों के छाल, फूल, पत्ते आदि मिलाकर 7-8 दिन तक रखा जाता है। उसके बाद उस बर्तन को आग पर गरम किया जाता है और गरम होने पर जो भाप निकलती है उसको नली के द्वारा दूसरे बर्तन मैं एकत्रित किया जाता है। भाप ठंडी होने पर महुआ की शराब होती है।

अन्य उपयोग

महुआ खाने में ही नहीं कई बीमारियों के इलाज में भी बहुत काम आता है। महुआ के पेड़ की छाल से लेकर उसके पत्ते, बीज और जड़ औषधिय गुणों से भरे होते हैं। डायबिटीज और गठिया जैसी गंभीर बीमारियां इससे दूर हो जाती हैं।

महुआ के फूल से कई तरह के पकवान बनाए जाते हैं। मार्च-अप्रैल के महीने में महुआ का पेड़ इन खूबसूरत फूलों से लदा रहता है। इन बीजों को सुखा कर लोग अपने घरों में इससे रोटी, पुए और हलवे जैसी चीजें बनाते हैं। खाने में ये जितना टेस्टी होता है उतना ही ये सेहत के लिए भी फायदेमंद होता है। खास बात ये हैं महुआ बहुत लंबे समय तक सुखा कर स्टोर किया जा सकता है। एक बार जब ये सूख जाता है तो सालों इसका प्रयोग किया जा सकता है। महुआ में कार्बोहाइड्रेट, फैट, और प्रोटीन के साथ ही कैल्शियम, फास्फोरस आयरन, कैरोटीन और विटामिन सी भी भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इतने पोषक तत्वों से भरे होने के कारण इसे खाने के बहुत से फायदे होते हैं। आइए जाने की सेहत के लिए महुआ का कौन सा पार्ट किस रोग के लिए फायदेमंद हैं।

हर तरह की बीमारी से छुटकारा दिलाता है महुआ, जानें इसके फायदे

कफनाशक होता है महुआ का फूल

महुआ का फूल कफनाशक होता है। इसे किसी भी रूप में खाया जाए तो ये जुकाम और कफ से बचाता है। इतना ही नहीं जिन्हें ब्रोंकाइटिस या लंग्स में कफ जमने की दिक्कत हो वह महुआ की छाल का काढ़ा जरूर पीएं। साथ ही महुए को किसी न किसी रूप में आहार में शामिल करें।

पेट के कीड़े मारने वाला

बच्चों को अक्सर पेट में कीड़े हो जाते हैं। ऐसे में उन्हें महुए की छाल का काढ़ा दें और महुए की रोटी ही खिलाया करें। साथ ही पेट की अन्य समस्याओं को भी दूर करता है। जैसे दस्त या अपच आदि में छाल का रस पीएं। इसके रस से अल्सर भी सही हो जाता है।

डायबिटीज में होता है अमृत

डायबिटीज में महुए की छाल अमृत की तरह काम करती है। हालांकि महुआ के फूल का प्रयोग डायबिटीज रोगियों को नहीं करना चाहिए क्योंकि इसमें शुगर बहुत होती है। इसलिए इसकी छाल का प्रयोग ही करें।

गठिया में पीएं छाल का रस और करें तेल की मालिश

महुआ की छाल गठिया के इलाज में बहु कारगर है। महुआ की छाल को आप उबाल कर उसका जूस पीएं। ये गठिया के दर्द को ही नहीं बल्कि अंदर आ गई सूजन और जकड़न को भी कम करता है। साथ ही महूआ के फूल, जड़ और छाल के साथ बीजों को पीस कर सरसों के तेल में पका लें और इसकी मालिश जोड़ों पर करें। इससे बहुत आराम मिलेगा।

टॉन्सिलिटिस और दांत दर्द में भी कारगर

महुआ की छाल में टॉन्सिलिटिस और दांत का दर्द कम करे का भी गुण होता है। पायरिया जैसी बीमारी में महुआ की छाल बहुत काम आती है। महुआ की छाल को पीस कर उसे पानी मिला लें और इस पानी से आप गरारे करें और इस रस को दातों और मसूड़ें पर लगा लें। इससे काफी आराम मिलेगा।

पाइल्स में कारगर

महुआ के फूल पाइल्स की बीमारी में बहुत काम आते हैं। इसमें क्योंकि बहुत रफेज होता है इसलिए इसे खानेसे कब्ज जैसी बीमारी भी दूर रहती है। पाइल्स में आप इसके फूलों को घी में भुन लें और खाते रहें।

- महुए के बीज से तेल निकालने के बाद वह खली के रूप में पशुओं को खिलायी जाती है।
- महुए का तेल
- महुए के ताजे और सूखे फल से 'महुअरी' (महुए की रोटी) बनायी जाती है जो अत्यन्त स्वादिष्ट होती है।
- महुए का फल पकने के बाद उसे खाया जाता है। कच्चे फल में से की तरकारी बनायी जाती है।
- महुए का फूल, फल, बीज, छाल, पत्तियाँ सभी का आयुर्वेद में अनेक प्रकार से उपयोग किया जाता है।
- महुए का धार्मिक महत्व भी है। रेवती नक्षत्र का आराध्य वृक्ष है।

सोहन नाथ जोगी
वरिष्ठ कार्यक्रम प्रबंधक
वाग्धरा – बाँसवाड़ा

विश्व मलेरिया दिवस (25 अप्रैल 2021)

||मलेरिया मच्छर का जितना प्रचलन् बढ़ेगा, उतना ही आपके जीवन को खतरा बढेगा ||
"मलेरिया को मात देने के लिए तैयार"

विश्व मलेरिया दिवस 25 अप्रैल को प्रतिवर्ष मनाया जाता है, ताकि मलेरिया को समाप्त करने के लिए किए जा रहे प्रयासों पर वैश्विक ध्यान दिया जा सके और बीमारी से होने वाली पीड़ा और मृत्यु को कम करने के लिए कार्रवाई को प्रोत्साहित किया जा सके।विश्व मलेरिया दिवस का उद्देश्य मलेरिया की शिक्षा और समझ को एक वैश्विक संकट के रूप में प्रदान करना है जो रोकथाम योग्य है और एक बीमारी है जो इलाज योग्य है।

भारत में हर साल मलेरिया की बीमारी के चलते दो लाख से ज्यादा मौतें होती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक हर साल 2,05,000 मौतें मलेरिया से होती हैं। इस घातक बीमारी की मार सबसे ज्यादा बच्चों पर पड़ती है। 55,000 बच्चे जन्म के कुछ ही सालों के भीतर काल के मुंह में समा जाते हैं। 30 हजार बच्चे पांच से 14 साल के बीच मलेरिया से दम तोड़ते हैं। 15 से 69 साल की उम्र के 1,20,000 लोग भी इस बेहरम बीमारी से बच नहीं पाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी विश्व मलेरिया रिपोर्ट 2020 का कहना है कि भारत ने मलेरिया के मामलों में कमी लाने के काम में प्रभावी प्रगति की है। यह रिपोर्ट गणितीय अनुमानों के आधार पर दुनियां भर में मलेरिया के अनुमानित मामलों के बारे में आंकडे जारी करती है। रिपोर्ट के अनुसार भारत इस बीमारी से प्रभावित वह अकेला देश है जहां 2018 के मुकाबले 2019 में इस बीमारी के मामलों में 17.6 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। भारत का एनुअल पेरासिटिक इंसीडेंस (एपीआई) 2017 के मुकाबले 2018 में 27.6 प्रतिशत थाऔर ये 2019 में 2018 के मुकाबले 18.4 पर आ गया। भारत ने वर्ष 2012 से एपीआई को एक से भी कम पर बरकरार रखा है।भारत ने मलेरिया के क्षेत्रवार मामलों में सबसे बडी गिरावट लाने में भी योगदान किया है यह 20 मिलियन से घटकर करीब 6 मिलियन पर आ गई है। साल 2000 से 2019 के बीच

मलेरिया के मामलों में 71.8 प्रतिशत की गिरावट और मौत के मामलों में 73.9 प्रतिशत की गिरावट आई है। भारत ने साल 2000 (20,31,790 मामले और 932 मौतें) और 2019(3,38,494 मामले और 77 मौतें) के बीच मलेरिया के रोगियों की संख्या में 83.34 प्रतिशत की कमी और इस रोग से होने वाली मौतों के मामलों में 92 प्रतिशत की गिरावट लाने में सफलता हासिल की है।

मलेरिया, सामान्य बुखार होने के बाद भी न केवल मृत्यु दर और रुग्णता में योगदान दे रहा है, बल्कि लोगों पर आर्थिक बोझ भी डालता है।राजस्थान सरकार ने 2022 तक मलेरिया उन्मूलन का लक्ष्य रखा है। राज्य से मलेरिया को खत्म करने के प्रयास में, स्वास्थ्य विभाग ने सभी जिलों को मलेरिया उन्मूलन के उपाय करने के निर्देश जारी किए हैं। भारत 2030 तक पूरे देश में मलेरिया (शून्य स्वदेशी मामलों) को खत्म करने का लक्ष्य बना रहा है। राजस्थान 26 निम्न और मध्यम संचरण राज्य के बीच है और इसे 2022 तक मलेरिया को खत्म करने के लिए सौंपा गया है।

मलेरिया क्या है

मलेरिया मच्छर के काटने से होने वाली एक गंभीर बीमारी है।यह एक प्रकार का बुखार है जो ठण्ड या सर्दी (कॅपकपी) लग कर आता है। मलेरिया रोगी का रोजाना या एक दिन छोडकर तेज बुखार आता है।आमतौर पर लोग मलेरिया का नाम सुनते ही डर जाते हैं। क्योंकि मलेरिया का समय पर इलाज न मिलने पर ये जानलेवा साबित होता है। मलेरिया मादा एनाफ़िलेज जाति के मच्छरों से फैलता है, जो अक्सर साफ पानी में पैदा होता है और शामके समय काटता है। गर्मी और बरसात के मौसम में मलेरिया की बीमारी का प्रकोप बढ़ने लगता है।

मलेरिया का कारण

मलेरिया का कारण है मलेरिया परजीवी कीटाणु जो इतने छोटे होते है कि उन्हें सिर्फ माइक्रोस्कोप ही देखा जा सकता है। ये परजीवी मलेरिया से पीडित व्यक्ति के खून मे पाये जाते है। इनमें मुख्य है -

1. प्लाजमोडियम वाइवैक्स
2. प्लाजमोडियम फैल्सीफेरम

मलेरिया केसे फैलता है?

मलेरिया जीवन चक्र के दो प्रवाह होते है, जिससे यह रोग बहुत तेजी से फैलता है:-

प्रथम प्रवाह

(संक्रमित मच्छर से..... स्वस्थ मनुष्य को)

जब संक्रमित मादा ऐनोफेलिज मच्छर किसी स्वस्थ्य व्यक्ति को काटता है तो वह अपने लार के साथ उसके रक्त मे मलेरिया परजीवियो को पहुंचा देता है। संक्रमित मच्छर के काटने के 10-12 दिनों के बाद उस व्यक्ति मे मलेरिया रोग के लक्षण प्रकट हो जाते है।

दितीय प्रवाह

(मलेरिया रोगी से..... असंक्रमित मादा एनोफेलिज मच्छर मे होकर अन्य स्वस्थ व्यक्तियो को)

मलेरिया के रोगी को काटने पर असंक्रमित मादा ऐनोफेलिज मच्छर रोगी के खून के साथ मलेरिया परजीवी को भी चूंस लेते हैं व 12-14 दिनों मे ये मादा ऐनोफेलिज मच्छर भी संक्रमित होकर मलेरिया फैलाने मे सक्षम होते है तथा जितने भी स्वस्थ्य मनुष्यों को काटते है। उन्हें मलेरिया हो जाता है। इस तरह एक मलेरिया रोगी से यह रोग कई स्वस्थ मनुष्य में फैलता है।

निदान

रक्त की जाँच

- कोई भी बुखार मलेरिया हो सकता है। अतः तुरन्त रक्त की जाँच करवाना, सभांवित उपचार लेना तथा मलेरिया पाये जाने पर आमूल उपचार लेना आवश्यक है।
- बुखार होने पर क्लारोक्विन की गोलिया देने से पहले जांच के लिए खून लेना आवश्यक है। रक्त की जांच से ही यह पता चलता है कि बुखार मलेरिया है या नही। जांच के लिये कींटाणु रहित सुई को मरीज की अनामिका अंगुली मे थोडा से प्रवेश कराकर खून की एक दो बूंदे कांच की पट्टिका से स्लाइड बनाई जाती है। जांच की रिपोर्ट तुरन्त प्राप्त करें।

मलेरिया के लक्षण, बचाव और घरेलू उपाय

मलेरिया के लक्षण

1. लगातार बुखार रहना 2. ज्यादा पसीना आना 3. शरीर में कमजोरी आना और दर्द रहना 4. जी मचलना और उल्टी होना

कभी-कभी इसके लक्षण हर 48 से 72 घंटे में दोबारा दिखायी देते हैं।

मलेरिया के बचाव के तरीके

1. घर के पास साफ-सफाई रखना 2. कूलर के पानी की सप्ताह में एक बार सफाई करना 3. पुराने बर्तनों में पानी जमा न होने देना 4. पूरी बाजू के कपड़े

पहनना 5. मच्छरदानी या मॉस्किटो रेप्लीकेंट का उपयोग करना 6. घर के दरवाजों और खिड़कियों पर जाली लगाएं और AC या पंखों का इस्तेमाल करें, ताकि मच्छर एक जगह पर न बैठें 7. ऐसी जगह ना जाए, जहां झाड़ियां हों, क्योंकि वहां मच्छर हो सकते हैं 8. ऐसी जगह न जाएं जहां पानी इकट्ठा हो क्योंकि वहां मच्छर पनपने का खतरा होता है

मलेरिया के घरेलू उपचार

1.गिलोय मलेरिया के इलाज के लिए अमृत मानी जाती है। गिलोय की गोली या काढ़ा बनाकर दिन में 3-4 बार सेवन करने से आराम मिलता है। गिलोय, तुलसी, काली मिर्च और पपीते के पत्तों को उबालकर या रात में मिट्टी के बर्तन में भिगोकर सुबह छानकर पीएं। बुखार में राहत मिलेगी।2. मलेरिया में विटामिन सी और बहुत सारे पौषक तत्वों से भरपूर अमरूद का सेवन करना भी फायदेमंद होता है। 3. तुलसी के पत्ते (8-10) और 7-8 काली मिर्च को पीसकर शहद के साथ सुबह-शाम लेने से बुखार में कमी आती है। 4. मलेरिया में पीड़ित को नींबू में काली मिर्च और सेंधा नमक या सेब पर काली मिर्च और सेंधा नमक छिड़क कर खिलाने से लाभ होता है। 5. मलेरिया में तरल पदार्थों के अलावा खिचड़ी, दलिया, साबुदाना जैसे हल्के और पौषक तत्वों से भरपूर आहार दें। 6. अदरक का काढ़ा मलेरिया के उपचार में लाभदायक होता हैजो हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाता हैऔर संक्रमण सेबचाने में मदद करता है। 7. दालचीनी का उपयोग मलेरया के लक्षणों जैसे बुखार,सिरदर्द और दस्त को सुधारने में मदद करता है ।

पुनः बुखार

पूरी अवधि तक आमूल उपचार की निधारित पूरी खुराक न लेने पर रोगी को मलेरिया बुखार दुबारा होने की सम्भावना रहती है। पुनः बुखार होने पर रोगी को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र मे तुरन्त ले जाना आवश्यक है।

सामान्य गलतियां

1. बुखार है तो लोग खुद या केमिस्ट से पूछकर कोई भी दवा ले लेते हैं। यह खतरनाक साबित होता है। बुखार में एस्प्रिन (Aspirin) बिल्कुल न लें। यह मार्केट में इकोस्प्रिन (Ecosprin), डिस्प्रिन (Dispirin) आदि ब्रैंड नेम से मिलती है। ब्रूफेन (Brufen), कॉम्बिफ्लेम (Combiflam) आदि पेनकिलर से भी परहेज करें क्योंकि अगर डेंगू है तो इन दवाओं से प्लेटलेट्स कम हो सकती हैं और शरीर से ब्लीडिंग शुरू हो सकती है। किसी भी तरह के बुखार में सबसे सेफ पैरासेटामॉल (Paracetomal) जैसे कि क्रोसिन आदि लेना है।
2. बुखार में लोग खुद ऐंटी-बायोटिक लेने लगते हैं, जबकि टायफायड के अलावा आमतौर पर दूसरे बुखार में ऐंटी-बायोटिक की जरूरत नहीं होती। ज्यादा ऐंटी-बायोटिक लेने से शरीर इसके प्रति इम्यून हो जाता है और जरूरत पड़ने पर ये असर नहीं करतीं। इनसे शरीर के गुड बैक्टीरिया भी मारे जाते हैं।
3. कई बार परिजन मरीज से खुद को चादर से ढककर रखने को कहते हैं ताकि पसीना आकर बुखार उतर जाए। इससे शरीर का तापमान बढ़ता है। इसके बजाय मरीज को खुली और ताजा हवा लगने दें। एसी, कूलर और पंखे में रखें।
4. कई बार मरीज को नहाने नहीं दिया जाता, जबकि मरीज नॉर्मल या हल्के गुनगुने पानी से नहा सकता है। नहाने की स्थिति में नहीं है तो भी टॉवल गीला कर स्पॉन्जिंग जरूर करें।
5. डेंगू में अक्सर तीमारदार या डॉक्टर प्लेटलेट्स चढ़ाने की जल्दी करने लगते हैं। यह सही नहीं है। इससे उलटे रिकवरी में वक्त लग जाता है। जब तक प्लेटलेट्स 20 हजार या उससे कम न हों, प्लेटलेट्स चढ़ाने की जरूरत नहीं होती।
6. अक्सर लोग बुखार में आराम नहीं करते और 3-4 दिन बाद ही ऑफिस जाना या दूसरे कामकाज करना शुरू कर देते हैं, जबकि बुखार में आराम बेहद जरूरी है। बुखार में कम-से-कम एक हफ्ते आराम जरूर करें। यह दवा का काम करता है। इसके बाद ऑफिस जा सकते हैं या दूसरे रुटीन काम कर सकते हैं। एक्सरसाइज आदि 15 दिन के बाद ही शुरू करें।

बचाव व रोकथाम

- घरो के अन्दर डी. डी.टी. जैसी कीटनाशकों का छिडकाव कराया जावे, जिससे मच्छरो का नष्ट किया जा सके।
- घरो में व आसपास गड्ढो, नालियो, बेकार पडे खाली डिब्बो, पानी की टंकियो, गमलो, टायर टयूब मे पानी इकट्ठा न होने दें।
- चूकि आमतौर पर यह मच्छर साफ पानी मे जल्दी पनपता है। इसलिए सप्ताह मे एक बार पानी से भरी टंकियो मटके, कूलर आदि खाली करके सुखा दे।
- टांके आदि पेयजल स्त्रोतो मे स्वास्थ्य कार्यकर्ता से टेमोफोस नामक दवाई समय समय पर डलवाते रहे।
- पानी के स्थायी स्त्रोतो मे मछलियां छुडवाने हेतु स्वा. कार्यकर्ता से सम्पर्क करे।
- जहां पानी एकत्रित होने से रोका नही जा सके वहां पानी पर मिटटी का तेल या जला हुआ तेल (मोबिलऑयल) छिडकें।
- खिड़कियों, दरवाजो मे जालियां लगवा लें। मच्छर दानी इस्तेमाल करें या मच्छर निवारक क्रीम, सरसों का तेल आदि इस्तेमाल करे।

गांव मे व्यवस्था

मलेरिया उन्मूलन करने के लिए हर गांव मे सूचना तंत्र निदान एव उपचार तंत्र तथा निशुल्क दवा वितरण केन्द्र तथा बुखार उपचार केन्द्र स्थापित किये गये है। जहां मलेरिया का निशुल्क उपचार किया जाता है।

अपने गांव मे क्या करें

- डी. डी. टी. आदि कींटनाशकों का छिडकाव अपने ओर आस पडोस के घरो के भीतर भी करवायें तथा छिडकाव दलों को सहयोग दे।
- बुखार का रोगी पाये जाने पर उसके बारे मे नजदीकी स्वास्थ्य कार्यकर्ता को तुंरत सूचना दे ताकि उसकी जांच व उपचार आरम्भ किया जा सके।
- बुखार होने पर दी जाने वाली गोलियों के बारे मे , खून की जांच के बारे में मच्छर वा लार्वाभवक्षी दवाओ के बारे में, डी.डी.टी. आदि कीटनाशकों के छिडकाव के तरीके वा सावधानियों के बारे मेतथा मलेरिया घोषित होने पर सम्भावित एवं आमूल उपचार के बारें मेंपूरी व सही जानकारी प्राप्त करें।
- पूरा उपचार व मुक्त दवादवा वितरण केन्द्रों से मुफ्त प्राप्त करें।
- स्वा.कार्यकर्ता, चिकित्सको की सलाह से मलेरिया का उपचार लें।

राजेश हिरन
स्टेट पॉलिसी एडवोकेसी लीडर (हेल्थ)
वागधारा

सूचना प्रौद्योगिकी से विकास या विनाश

आज हमारे समुदाय, शहर, राज्य, देशऔर विश्व में सुचना प्रौद्योगिकी का एक महत्व है और जरुरत भी है । इसका उपयोग हम व्यापार, वाणिज्य एवं संचार के लिए करते है । सूचना प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन में बहुत बदलाव ला दिया है । पिछले कुछ वर्षो में सूचना प्रौद्योगिकीमें बहुत प्रगति हुई है विश्व का अधिकाँश भाग इससे जुड़ चुका है जिसके कारण इसकी उपयोगिता भी बढ़ी है ।

सूचना प्रौद्योगिकी सिर्फ सूचना के आदान प्रदान के लिए ही नहीं है, ये हमारे जीवन को आसान और बेहतर करने के लिए भी आवश्यक है, हम इन सुविधाओं का किस प्रकार उपयोग करते है और किस क्षेत्र में कितना उपयोग कर सकते है ये हम पर निर्भर करता है ।

सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यपार, उद्योग आदि हर एक स्थान पे अपना अलग महत्व रखता है इसकी सहायता से सभी जगह पर बहुत विकास हुआ है और आगे भी इसका विकास होता जा रहा है ।इसके माध्यम से कम समय में ज्यादा काम किया जाता है, ऑनलाइन सरकारी कामकाज, ई-बैकिंग द्वारा बैक का कामकाज ऑनलाइन, शिक्षा के लिए ई-एजुकेशन आदि माध्यम से सूचना प्रौद्योगिकी का विकास हुआ है ।

यह हमारे आम जीवनको भी बहुत प्रभावित करता है सूचना प्रौद्योगिकी अगर प्रभावित और उपयोगी है तो इसके कुछ हानिकारक प्रभाव भी है जो हमारे जीवन पर दुष्प्रभाव डालते है, इसलिए इसका उपयोग किस तरह से, किस उपयोग में और कैसे करना है इसका एक बड़ा महत्त्व है जिसे हमें समझना और इसके बारे में जानकारी होना बहुत ही जरुरी है ।

आइये, हम इसके सही उपयोग से जीवन में विकास और गलत उपयोग से जीवन में विनाश के बारे में जानते है ।

सबसे पहले हम जानते है इससे मिलने वाली सुविधा के बारे में...

1) चिकित्सा के क्षेत्र में सुचना प्रौद्योगिकी का बहुत बड़ा योगदान रहा है, इसकी सहायता से कम समय में मरीजो को चिकित्सा दी गई है मेडिकल सुविधा आसान हुई है, एक फ़ोन कॉल से आपके पास मेडिकल की सहायता पहुंच जाती है । इन्टरनेट की सहायता से हर बिमारी के चिकित्सक के बारे में जानकारी, दवाइयों के बारे जानकारी हमें आसानी से मिल जाती है ।

2) बैको की सेवाओं में सुविधा हुई है, पहले हमें घंटो लाइन में लगकर अपना काम करना होता था परन्तु इसके आने के बाद हम घर बैठे उन्ही काम को आसानी से कर सकते है ।

3) सुचना प्रौद्योगिकी ने व्यक्ति की कार्यक्षमता में वृद्धि की है और रोजगार के नए द्वार भी खोल दिए है ,इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर निरंतर बढ़ रहे है। सूचना के महत्व के साथ सूचना की सुरक्षा का महत्व भी बढ़ा है जिसके कारण सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े कार्यो में रोजगार के अवसर भी बड़े है,विशेष रूप से सूचना सुरक्षा एवं सर्वर के विशेषज्ञों की मांग बड़ी है ।

4) ग्रामीण क्षेत्रो में भी तकनीकी विकास बहुत तेजी से होने लगा है, ग्रामीण साक्षरता की स्थिति में बदलाव आया है। इस प्रौद्योगिकी के उपयोग से देश में अनेक ग्रामीण केंद्र संचालित हो रहे है जिनमे सामाजिक परिवेश में जागरूकता भी बढ़ रही है ।

5) व्यापार में भी इसका एक अलग ही महत्त्व है इसकी सहायता से बाजार की जानकारी,वस्तुओ की कीमतों का पता होना, व्यपारियो के बारे में पूरी जानकारी होना, देशो के मध्य वस्तुओ का आदान प्रदान में आदि में इसका प्रभाव पड़ा है । कम समय में ज्यादा काम हो पाया है, यातायात सरल हुआ जिससे समय की बचत हुई है और व्यपार में वृद्धि हुई है ।

6) किसानो को भी इससे बहुत लाभ मिला है खेती में तकनीकी जानकारी, फसल को खराब होने से बचाव के लिए और मौसम विभाग की जानकारी, फसल का बाजार का मूल्य आदि की जानकारी आसानी से प्राप्त हो जाती है ।

अब हम जानते है इसके दुष्प्रभाव के बारे में -----

जिस तकनीक के बहुत फायदे होते है तो उसके कुछ नुकसान भी होते है लेकिन नुकसान सभी को नहीं होता, जो व्यक्ति इसे गलत तरीके से उपयोग करता है गलत कामो के लिए करता है, उसे इसका नुकसान उठाना पड़ता है इसलिए इसके उपयोग करने से पहले इसके लिए सावधानियां भी बरतनी चाहिए ताकि किसी भी व्यक्ति को इससे नुकसान ना पहुंचे ।

जानकारी के अभाव में और सावधानिया ना रखने से होने वाले कुछ दुष्प्रभाव की जानकारी...

1) स्वंय की जानकारी को दुसरो से साझा ना करना, आजकल हर एक काम को तकनीकी से जोड़ दिया गया है ताकि आपको आसानी हो, जिसके लिए आपको अपनी व्यक्तिगत जानकारी को उस तकनीक में रखना होता है, लेकिन अगर आप अपनी जानकारी को किसी के साथ साझा करते है तो हो सकता है वो उसका दुरूपयोग करे इसलिए ये ध्यान रखना चाहिए की हमारी व्यक्तिगत जानकारी को किसी के साथ भी साझा ना करे ।

2) बैक में जब ई-बैंकिंग करते है तो उसमे हमारा अकाउंट नंबर, मोबाइल नंबर, आधार नंबर सभी की जानकारी रहती है अगर हम अनजाने में किसी को ये नंबर दे देते है तो हमें बहुत नुकसान हो सकता है इसलिए हमें सतर्क रहना चाहिए साथ ही पूरी जानकारी हासिल करके ही किसी को जानकारी भेजनी चाहिए ।

3) स्वास्थ्य का खराब होना, आज हर किसी के पास मोबाइल और कंप्यूटर है मोबाइल में इतने गेम आ चुके है की बच्चे उसी में व्यस्त रहने लगे है जिससे उनके स्वास्थ्य पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ रहा है, एक ही जगह पर बैठ के पूरा दिन गेम में ही निकाल देते है जिससे उनके शरीर में एक्टिवनेस खत्म हो जाती है । जिसके कारण बिमारी उनको आसानी से पकड़ लेती है, इसके साथ ही कम उम्र में ही आँखे कमजोर होना तो आम बात हो गई है ।हमें हमारे बच्चो का ध्यान रखना चाहिए, तकनीकी के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी दी जाये, इससे होने वाले लाभ के साथ साथ इसके दुष्प्रभाव के बारे में भी जानकारी दे ताकि हम सुचना प्रौद्योगिकी को अपने जीवन के विकास के लिए उपयोग ले ना की हमारे जीवन के विनाश के लिए ।

युवाओं के रोजगार और समुदाय के विकास के लिए हमें सूचना प्रौद्योगिकी की जानकारी और इसकी शिक्षा का ध्यान रखना चाहिए तभी हम हमारे समुदाय का विकास कर सकते है और युवाओं को भी इसके लिए आगे आना चाहिए ताकि वो अपने समुदाय को इससे जुडी हर प्रकार की जानकारी और उपयोगिता के बारे में बता सके ।

आकिब अहमद
आईटी प्रबंधक, वागधारा

सफलता की कहानी

(एक प्रयास लोगो के सेहत में बदलाव)
समुह का नामः- गीता सक्षम समुह, गाँवः- सालरिया, पंचायतः- देवदा, ब्लॉकः- घाटोल

सालरिया गाँव ग्राम पंचायत देवदा से 3 किलोमीटर की दुरी पर स्थित है l यह घाटोल तहसील के बाँसवाड़ा जिले के अंतर्गत आता है l बाँसवाड़ा जिला मुख्यतः आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है और यहाँ की स्थानीय भाषा वागड़ी है l सालरिया गाँव के लोग मुख्यतः अपनी आजीविका के लिए खेती- बाड़ी पर ही निर्भर है l यहाँ के किसान चौमासे में मक्का , तिल, उड़द और रबी में सिर्फ गेहूं लगाते है l इस गाँव में लगभग सभी छोटे किसान है उनके पास 2 से 3 बीघा जमीन है l यहाँ के लोगों को पहले 12 माह खाने के लिए अनाज नहीं मिल पाता था और उन्हें बाज़ार पर निर्भर रहना पड़ता था अनाज और सब्जियों के लिए l 2019 में वागधारा संस्था के माध्यम से गाँव में सक्षम समूह का गठन किया गया जिसमे 20 महिलाओं को जोड़ा गया ,जो गाँव के अलग - अलग फले से थी और इन महिलाओ की आर्थिक स्थिति कमजोर थी l इस समुह का नाम महिलाओं के द्वारा गीता सक्षम समुह रखा गया और समूह की 3 महिला लक्ष्मी, कीर्ति और तुलसी का चयन अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और सचिव के लिए किया गया, जिन्हें महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने का कार्यभार दिया गया l समुह बनाने का प्रमुख

उद्देश्य है इन महिलायों को सक्षम यानि आत्मनिर्भर बनाना और बाज़ार पर इनकी निर्भरता को कम करना l प्रतिमाह बैठक के दौरान संस्था के सहजकर्ता नरेश बुनकर और स्वराज मित्र के द्वारा इन महिलाओ को सच्ची खेती, सच्चा बचपन और सच्चा स्वराज के बारे में जानकारी दी गई 2019 तक इस गाँव में कोई भी महिला सब्जी बाड़ी नहीं लगाती थी और प्रतिदिन इन्हें 50-60 रूपय सब्जी खरीदने पर खर्च करने पड़ते थे और आर्थिक स्थिति सही नहीं होने के कारण यहाँ के लोग सिर्फ रोटी और दाल ही खाते थे ।जिस कारण से महिलाओं में खून की कमी और कमजोरी होने लगी थी और बच्चे कुपोषण का शिकार हो रहे थे l लेकिन जब वागधारा के माध्यम से महिलाओं को सब्जी बीज कीट मिला तब उन्होंने अपने अपने घरों में उसे लगाया और प्रतिमाह बैठक में उन्हें इसके रखरखाव और दवाई बनाने के बारे में जानकारी दी गई और बनवाई गई l समूह से जुड़ने के बाद महिलाओ में जागरूकता बढ़ी और आज समूह की सारी महिलाओ के घर पर पोषण वाटिका है जिसमे उन्होंने कई प्रकार के फल और सब्जिया जैसे की बैगन, आल, मिर्च, टमाटर, मेथी , धनिया , पालक, आम, अमरुद , केला , निम्बू, कठहल आदि लगाये हुए है और इसमें जैविक खाद और जैविक दवाई का इस्तेमाल करते है l समूह के कुछ महिलाये ऐसी भी है जो अधिक सब्जी का उत्पादन होने पर उन्हें बेचती भी है और मुनाफा कमा रही है l इन 20 महिलाओं ने अपने अपने फलों के दूसरी अन्य महिलाओं को भी इसकी जानकारी दी और आज के समय में गाँव के लगभग हर परिवार के यहाँ किचन गार्डन देखने को मिल जाता है l समुह की 20 महिला के माध्यम से लोगों की सोच और सेहत में अच्छा बदलाव देखने को मिला और ये 20 महिला गाँव की अन्य महिलाओ के लिए प्रेरणास्त्रोत बनी l

ऋचा राजपूत
कार्यक्रम अधिकारी (सच्ची खेती) हिरन इकाई

वागड़ रेडियो 90.8 FM द्वारा मनाया गया पोषण पखवाड़ा

यूनिसेफ के तत्वाधान में वागधारा संस्था द्वारा संचालित वागड़ रेडियो 90.8 FM में पोषण पखवाड़ा मनाया गया, जिसमें 16 मार्च 2021 से 31 मार्च 2021तक इस पोषण पखवाड़े के अंतर्गत समुदाय के साथ जुड़कर अलग-अलग आंगनवाड़ी केंद्रों एवं वागड़ रेडियो स्टूडियो से विषय विशेषज्ञों के साथ पोषण से संबंधित चर्चाओं का सीधा प्रसारण किया गया |

इसी के साथ कई विषयों को ध्यान में रखते हुए मुख्य रूप से कुपोषण को लेकर चर्चा की गई जिसमें कुपोषण के कारण उनके परिणाम के साथ ही कुपोषित व अतिकुपोषित बच्चों की पहचान कैसे की जाती है, उनका इलाज कैसे किया जाता है वहीं स्वास्थ्य विभाग और सरकार की ओर से उन्हें कैसे सहायता प्रदान की जाती है साथ ही पोषण पंचायत व पोषण ग्राम सभा से कैसे समुदाय में पोषण की वृद्धि की जाए और पोषण वाटिका का क्या महत्व है इसी के साथ ही आंगनबाड़ी केन्द्रों की सहायिका,आशा सहयोगिनी और कार्यकर्ताओं, सुपरवाइजर ने भी हमे बहुत सारी जानकारी दी कि किस तरह से उन्होंने कोरोना काल में सारे नियमों को अपनाते हुए आंगनवाड़ी केंद्रों का संचालन किया और आंगनवाड़ी केंद्रों पर जो बच्चे नहीं आ पाए उन तक पोषाहार पहुंचाया गया और उनके पोषण में कहीं कमी नहीं आने दी,साथ ही गर्भवती महिलाओं, किशोरी बालिकाओ और धात्री महिलाओं के बारे में भी पोषण के बारे में जानकारी दी गई की वे अपने घर पर पोषण वाटिका लगाकर किस तरह अपने पोषण को बढ़ा सकती है और अपने स्वास्थ्य को बेहतर बना सकती हैं |

साथ ही इस पूरे पन्द्रह दिनों के कार्यक्रम में वागड़ रेडियो के स्टेशन प्रबंधक श्री रंजीत यादव व रेडियो टीम से सीमा मोहने, छाया जमड़ा, जाग्रति भट्ट व अंजलि पाराशर ने अपनी उपस्थिति देते हुए कार्यक्रम को सफल बनाया |

मार्गदर्शक : दीपक शर्मा, गगन सेठी, नरेन्द्र कुमार | मुख्य संकलक : परमेश पाटीदार | सहसंकलक : जागृती भट्ट